

9

2 ग्रह, लग्न, राशि, नक्षत्र

1) 12 राशियाँ - 108, वृष

2) 9 ग्रह - 1 सूर्य, चंद्र, मंग

3) 27 नक्षत्र - अश्विनी, भर

नक्षत्र निकालने -

मास समोदर दुकान कार तिथि संयुक्त कार जोड़  
कृष्ण पक्ष में अश्विनी स्वाती शुक्ल से ले

10 घड़ी - लग्न

15 घड़ी - चरण

20 घड़ी - राशि

चन्द्र जिस लग्न में होता है उसे ही उपर्युक्त नक्षत्र कहते हैं

चन्द्र राशि - नक्षत्र की संख्या = राशि की संख्या

राशि ->

नक्षत्र ->

नामिका प्रभु  
उप

मेष वला	जुष हके	मिथुन	कर्क
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
अश्लेषा	मकर	कुम्भ	मेघ
पुष्य	मकर	कुम्भ	मेघ
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
अश्लेषा	मकर	कुम्भ	मेघ

सिंह

सिंघा

तुला

वृश्चिक

मेष	पू० मा०	उपा०	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मृगशिरा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

धनु

मकर

कुम्भ

मेघ

मेष	पू० मा०	उपा०	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मृगशिरा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य



4) लग्न →

मीने मेष मकर वृष तूट्टार

चित द्वारे वृष कुम्भयो

मकर मियुने पंचमम्

शिव नरको प्रये-पटी

सूर्योदय के समय सूर्य जिस लग्न में होता है उस उस समय में लग्न कहते हैं। (सूर्य की राशि के बारे में आगे है)

प्रत्येक लग्न रात में जाता है।

मेष लग्न का एक दिन में रात में जाने की अवधि -  $\frac{3}{30}$  घंटे

2 घंटे = 1 घड़ी

60 घंटे = 1 घड़ी

60 घड़ी = 1 दिन

जैसे हमने 18 वैशाख को 6:45 पर सूर्योदय हुआ तो 18:46 पर लग्न होगा

वैशाख में सूर्य की राशि - मेष

मेष लग्न का एक दिन में रात में जाने की अवधि -  $\frac{3}{30}$  घंटे

18

$$= \frac{3}{30} \times 18$$

$$= \frac{3}{10} \times 18 \times 2$$

8 घंटे

$$= \frac{3}{5} \text{ घंटे}$$

$$= 36 \text{ मिनट}$$



जन्म लग्न की कुल अवधि = 3 घड़ी = 36 = 6 घंटे = 1 घटा 12 मिनट

रात में = 36 मिनट

दिन में = 36 मिनट

6:45 पूर्ण जन्म स्वप्न -

7:21 रात लग्न स्वप्न - मेघ

इसी प्रकार 18:46 पर लग्न - तुल

### 5) लग्न के आधार पर विमान

सूर्योदय से लग्न बाद सूर्योदय होता है।

वैशाख मास के प्रथम दिन विजाह्न - 30 घड़ी

ज्येष्ठ मास ————— 30 घड़ी

वर्षा ऋतु — 3 घड़ी

6) 12 मास - चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, सावन, भाद्र, अश्वि, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

### 7) जन्म कुण्डली विचार

1) जन्म कुण्डली में प्रथम भाव लग्न होता है।

2) मिरा राशि में चन्द्र होता है वह जातक की राशि होती है।

3) महादशा - अन्तर्दशा विचार

	सू०	च०	म०	तु०	गु०	शु०	रा०	र०	के०
दशा	6व०								
अन्तरदशा	3व० 18								



### 3) ग्रह विचार -

सू०	राशि/पक्ष	मा०	सिंह	सिंह	मेष	तुला
च०	राशि/पक्ष	मा०	वृष	वृष	वृष	वृश्चिक
म०	राशि/पक्ष	मा०/वक्त्र	मेष/वृश्चिक	मेष	मकर	कर्क
लु०	राशि/पक्ष	—	कन्या, मिथुन	कन्या	कन्या	मीन
गु०	राशि/पक्ष	—	धनु, मीन	धनु	कर्क	मकर
शु०	राशि/पक्ष	—	तुला, वृष	तुला	मीन	कन्या
श०	राशि/पक्ष	—	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तुला	मेष
रा०	राशि/पक्ष	वक्त्र				
के०	राशि/पक्ष	वक्त्र				

१) माते २) मा०, व० ३) सप्तमी ४) मूल विचार ५) उच ६) नीच ७) मित्र

ग्रह के नीचस्थ से स्वतंत्र भाव उत्पन्न

सू०		भाणिचय				
च०		माते	7	3/10	5/12	7/12
म०		मैगा	7	3/10	5/12	7/12
लु०		पन्ना	7/4/8	3/10	5/12	—
गु०		पुस्तक	7	3/10	5/12	7/12
शु०		हीरा	7/5/9	3/10	5/12	7/12
श०		नीलग	7	3/10	5/12	7/12
रा०		गोमय	7/3/10	3	5/12	7/12
के०		वैदूर्य	7	3/10	—	7/12
		वैदूर्य	7	3/10	—	7/12
शत्रु	सप्त	वक्त्राण	हृ	पुर्णदृष्टि	५	२/५



विशेष रूप से  
प्रभाव

कलश

नाम

स्वभाव

स्थिति

	स्व	उच्च	नीच	मूलतः कार्य
मेष	मं०	सू०	श०	मं०
वृष	श०	चं०	—	चं०
मिथुन	व०	—	—	—
कर्क	चं०	ग०	मं०	—
सिंह	सू०	—	—	सू०
कन्या	व०	सू०	श०	व०
तुला	श०	शनि	सूर्य	श०
वृश्चिक	मं०	—	चं०	—
धनु	ग०	—	—	ग०
मकर	श०	मं०	श०	—
कुम्भ	श०	—	—	श०
मीन	ग०	व० श०	व०	—



## भाव चक्र

प्रथम भाव → तन, शरीर | मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ - बलवान

द्वितीय भाव → धन, मित्र, घोडा, कौष, परिवार, आश्रय, नाक, अश्वकार्य

तृतीय भाव → भाई, बहन, पराक्रम, साहस, दम्भ, खौसी, दास-कर्म, हाथ, आभूषण, दृष्ट

चतुर्थ भाव → घर, सुख, माता | कर्क मीन, मकर का उत्तराशु - बलवान | कारक-चंद्र, बुध

पंचम भाव → विद्या, संतान, लुब्ध, यश | कारक-शुक्र - गुरु

षष्ठ भाव → रोग, शत्रु, झगडा | कारक-शनि, मंगल, पशु, कुरकर्म, मौसी, लडा, लोह, तल्वी

सप्त भाव → पत्नि, विवाह | बलवान - वृश्चिक, वैश्विक आश्रयनी,

अष्ट भाव → आयु, मृत्यु | कारक-शनि, गुप्तधन, तारु

नव भाव → धर्म | कारक-शुक्र, गुरु, भाग्य, दीप्ति के संबंध

दशम भाव → कर्म, भोग, पिता | मेष, सिंह, वृष पूर्वाशु, धनु मा उत्तराशु बलवान काट्य

एकादश भाव → लाभ | कारक-शुक्र, आय, आश्रयनी, पुत्र-वधु

द्वादश भाव → हानि | कारक-शनि, व्यय, वण्ड, रोग, शत्रु-विरुद्ध, मोक्ष, चोर, पाप

प्रथम भाव → जाति, आयु, दादी, नाता, सुख, दुख

तृतीय भाव - चाचा, मामा,

चतुर्थ भाव - ब्राह्म, भवान, मल्लाय, नानी, पिता का धन, खेती

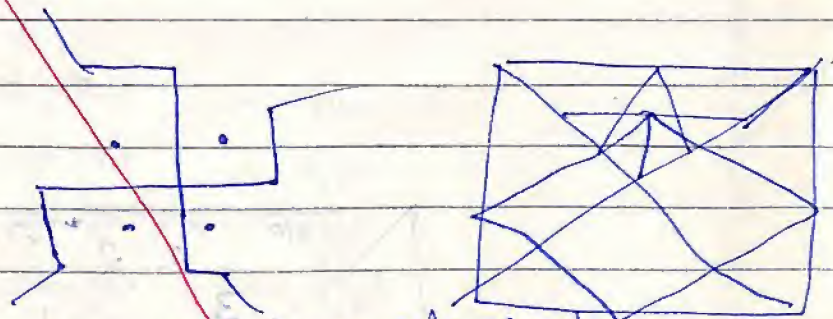
पंचम - मामे का सुख, नीकरी, भूमिस्थ



① अग्निवास → ✓ अन्य

तिथि + वार + 1  
4 यदि। वृत्ते स्वर्ग में अग्निवास पूर्णनाश  
— 2 — पातल — अर्थनाश  
— 3, 6 — पृथ्वी — सुखप्रद

② जन्म कुण्डली के शुक्र में →



ॐ श्री गणेशाय नमः एक दुन्तो महा बुद्धि सर्व अज्ञो गणनायका  
सर्व सिद्ध करे देवा गौरी पुत्र सेनायका। जननी जन्म सोखय नमः वृद्धनी  
कुल सम्पदा। पदवी पूर्ण पुण्य नमः लिखते वही पत्रिका

③ गण्डमूल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती ये छः नक्षत्र  
गण्डमूल हैं।

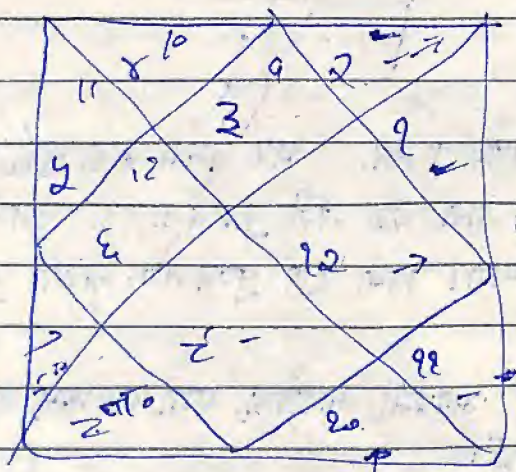
धरती सोई सूर्य सत्रांति से २, ७, ९, १०, २१, २४ धरती सोई  
सूर्य नक्षत्र से ५, ११, १२, १९, २६ धरती सोई होती है।

(५) पंचको- धर्म, शत, पूमा, उमा, रेव (अंतिम ५ नक्षत्र)

भूमि आस्वला- सूर्य सत्रांति से १, २, ३, ११, १६, १८, १९ दिन धरती सूर्यका  
पञ्च, दृक्के वृषि तालव, सूर्यमणि काय आश्विन नक्षत्र



3





9

(५) विवाह ~~अवधि~~ का  
वर्तमान काल

(I) अमानस्य

(II) रिक्ता तिथि - ५/१/१५ चन्द्र तिथि -

(III) (क) स्थावर वेला

दिन	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	श.	शं.
पट्ट	४	७	२	५	४	३	६

(IV) जन्म नक्षत्र

(V) पौष मास

(VI) श्रवण - मं.श.सू.क्रमशः अधि

(VII) भद्रा

कृष्ण पक्ष दिन

- ७/१५

कृष्ण पक्ष रात

- ३/१०

शुक्ल पक्ष दिन

- ४/१५

शुक्ल पक्ष रात

- ५/११

(VIII) तिथि मास नक्षत्र अत घटी - ५

(IX) तुलिन

दिन	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	श.	शं.
तिथि	७	६	५	४	३	२	१

(X) भद्रा

शेष मकर वृष कर्कट स्वर्ग

(सुख)

(नाश-पातन) मिथुन तुला कन्या धनु नाग

(द्रव्य लाभ)

मीन कुम्भ अलिकसर मृत्यु

(विनाश)

विभुवन मध्य भद्रा व्याप्तम्

पञ्चक दग्धा

(XI) चन्द्र तिथि

सं.संक्रांति

५	४	३	२	१	१२	१०
मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	मिथु	कन्या	तुला
						वृश्चिक



२	१२	४	२
धनु	मकर	कुम्भा	मीन

द्वितीये मीने धनु-च चतुर्श वृष कुम्भयो

षट् मेष कर्कट च अष्टम सिधुने कन्या

वशात् अश्लेष च द्वादश मकर तुल्य (अश्लेष-वृश्चिक, मकर)

एवेस्तु तिथि तदा दग्धा तिथि आसि

इति वाक्येन दश महादाय मोहं निवार्य पंचकवाक्ये

महत्त्वपूर्ण है

(i) नता

(ii) पात

(iii) युति

(iv) वेध

(v) नासित्र

(vi) बुध पंचक

(vii) एकार्गल

(viii) क्रांति मान

(ix) उपग्रह

(x) दग्धा तिथि

पंचक

धारया तिथि दश अष्ट वेदाः

१२ १५ १० ८ ५

यदि र तिथि को पंचक जानना है तो

(i)  $2+12=14 \div 9 = 5$  (पंचक)

(ii)  $2+15=17 \div 9 = 8$

(iii)  $2+10=12 \div 9 = 3$

(iv)  $2+8=10 \div 9 = 1$

(v)  $2+5=7 \div 9 = 0$



11

कर के ५/४/१२ सूर्य न हो  
मन्त्र के ५/४/१२ गुरु न हो



12

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100







## (६) जन्म कुण्डली में ग्रह

14

- (१) ३, ६, ११ भाव पाप ग्रह शुभ
- (२) १, ४, ५, ७, ८, १० शुभ ग्रह अशुभ
- (३) ६, ८, १२ भाव के स्वामी जिन भावों में बैठते हैं वे भाव अनिष्ट साधक (खुशकल) होते हैं।
- (४) ८ तथा १२ भाव में सभी ग्रह - अनिष्टकारक
- (५) किसी भाव का स्वामी - पाप ग्रह - वृत्तीय भाव - शुभ  
 - शुभ ग्रह - मध्यम
- (६) रा०, के०, अष्टमेश यहाँ बैठते हैं वहाँ बिगाड़ते हैं।
- (७) २, ३, ७ भाव - अकेला शुभ - अशुभ
- (८) गुरु - ६ भाव - शत्रुनाश  
 शनि - ४ भाव - दीर्घायु  
 मंगल - १० भाव - भग्न निर्माण
- (९) पू० च०, उदित बुध, शु०, के, गु - क्रमशः एक दूसरे से अधिक शुभ  
 यदि ये शुभ ग्रह की राशि में हों तो - विशेष शुभ  
 पाप - अल्प शुभ
- (१०) १, ४, ७, १० भाव के ग्रह में अधिक शक्ति
- (११) ५, ८ भाव - सदैव शुभ फल
- (१२) ६ भाव ५ भाव से अधिक बलवान
- (१३) ३, ६, १२ भाव ३, ६, १२ में ये शुभ मिलें। अन्यथा अशुभ
- (१४) १२ तथा १२ भाव में पाप ग्रह - विनाश
- (१५) ३, ६, १०, ११ - रा० के रा० - शुभ
- (१६) ११ भाव - क्रूर - विशेष शुभ  
 शुभग्रह - शुभ



(१७) १,४,७,१० - गुरु - १ लाख वर्ष दूर - केन्द्राधिपति दोष

(१८) ——— शुक - १० हजार केन्द्राधिपति दोष

(१९) १,४,७,१० बुध - विपरीत

(२०) लग्न या लग्नेश - शुभ - अनन्त दोष दूर

(२१) केन्द्र-पाप गृह - शुभ

————— शुभ गृह - अशुभ

(२२) २ तथा १२ भाग - अक्षिपर अधिकार

(२३) लग्नेश से चतुर्थे, पेश से १२, १ से दशमेश शुभाशुभा

(२४) ३ से ६, ६ से ९ के स्वामी अधिक अशुभ

(२५) ३, ६, ९ भाव के स्वामी - अशुभाफल

(२६)

सूत्री में गृहों से २, ३, ४, ११, १२ - तात्कालिक मित्र

————— १, ५, ७, ८, ९ ————— शत्रु



# गृह्यसूत्र

सबसे अच्छा योग - त्रिपुष्कर

या फिर - द्विपुष्कर योग

यदि ये योग काकी दूर हो और जूड़े हो तो घंटी में देखो

के + का विमान कहें हैं यदि ये भी दूर हो तो देखो कि

फिर दिन परती जा मही है।

कुछ अन्य बातें

१) मे०, कर्म, लु०, म०, सि० का गृह्यारम्भ करें।

२) रिमता (४, ५, ११) को भी

३) गृह्यारम्भ काल में ३, ६, ११ गणघट

४) ————— ६, २, १२ गणघट

५) भगल पुष्कर दृष्ट, पुष्क, रैर, म०, पुष्क, मूल - भगलवार - गृह्यारम्भ करें

६) शनि — पुष्क, उ०, ज्ये, अ०, स्वा, भि — शनिवार - गृह्यारम्भ

७) गृह्यारम्भ के दिन संचयन अशुभ हैं तो

८) गृह्यारम्भ मिथु, क०, ध०, मीन के सूर्य में

किसी भी घातक में  
गृह्यारम्भ न करें

घर का देवस्थान - ईशान - अत्यंत शुभ

शौचालय - ईशान - अशुभ (तनाव)

————— - नैऋत्य - शुभ

जल सम्बंधी इकाई - ईशान - शुभ

————— - आग्नेय - अशुभ

रसोई - ईशान - अशुभ (तनाव)

————— - उत्तराय - शुभ

भारी समान	वायव्य	आशुभ
खाली जगह	वैश्वव्य	शुभ
भारी समान	वैश्वव्य	आशुभ

उत्तर-पूर्व	ईशान
उत्तर-पश्चिम	वायव्य
दक्षिण-पूर्व	आशुभ
दक्षिण-पश्चिम	वैश्वव्य

एरे रोकू काह रमगनी उ रजद रजदी सा मरा दी थीत उमरा  
उमरा हुम

دھڑ کا سا U - جی، دھڑ کا جیبت لوان رجزون بر  
پیل سروں، کالی سیر، لک، جیبت لوان رجزون بر  
U

गृहपरम्परा में

गृहपरम्परा के दिन सू० निवर्त नीच	गृह के स्वाधी का मरण
च० अस्त, निवर्त नीच	स्त्री
ग०	धन का नश

घ) नींव भरते समय

सू० - मिथुन -	मृगशिरा
सू० - कन्या -	राम



सू. - धनु - शागिकाश्व

सू. - मीन - शंखभद्र

60 प्रति - विमला

60 विमला - 1 कला

6 कला - 1 अंश

30 अंश = 1 राशि

ग्रह की सम राशि में  $\rightarrow$  बाल अवस्था = 30-25 अंश

कुमार - 24-19 अंश

पुत्रा - 18-13 अंश

वृद्धा - 12-7 अंश

मृत - 6-1 अंश

विषम राशि  $\rightarrow$  बाल अवस्था - ~~30-25~~ 1-6 अंश

कुमार - 7-12 अंश

पुत्रा - 13-18 अंश

वृद्धा - 17-24 अंश

मृत - 25-30 अंश

बाल मृत -  $\frac{1}{4}$  कल

मृत - विषम कल

कुमार -  $\frac{1}{2}$  कल

पुत्रा - पूर्ण कल

वृद्धा - दृष्ट कल

## ग्रहों का वर्णन

1) चन्द्र- जल, मोती, चाँदी, बरफ, दाढ़ि, मछुटे, आँख, नेत्र-रोग, पी लिय, गोंड आदि का प्रतिनिधित्व

2) मंगल- पराक्रम, झूठ, लाल रंग की वस्तुएँ, शस्त्रधातु, अहिंसक, चौर कर्म, खेरा,

शुभ स्थान- 3/6/11

3) बुध-



सू. - धनु - शनि का शव

सू. - मीन - शनि का शव

60 प्रति - मिसला

60 मिसला - 1 कला

6 कला - 1 अंश

30 अंश = 1 राशि

ग्रह की सम राशि में  $\rightarrow$  बाल अवस्था = 30-25 अंश

कुमार - 24-19 अंश

युवा - 18-13 अंश

वृद्धा - 12-7 अंश

मृत - 6-1 अंश

विष्णु राशि  $\rightarrow$  बाल अवस्था - ~~30-25~~ 1-6 अंश

कुमार - 7-12 अंश

युवा - 13-18 अंश

वृद्धा - 17-24 अंश

मृत - 25-30 अंश

बाल मृत -  $\frac{1}{4}$  कला

मृत - विष्णु

कुमार -  $\frac{1}{2}$  कला

युवा - 2 अंश कला

वृद्धा - 4 अंश कला

## ग्रहों का वर्णन

- 1) चन्द्र- जल, मोती, चाँदी, बरफ, दाई, भयंकर, आँख, नेत्र रोग, पीसिया, गोंड आदि का प्रतिनिधित्व
- 2) मंगल- पराक्रम, झुठ, लाल रंग की वस्त्रें, शस्त्राधार, अहिंसक, चौर कर्म, खेपरा  
शुभ स्थान- 3/6/11
- 3) बुध-



1000

1000

1000

1000

1000

1000

शुभ	धर	काल	उद्देश	अमृत	रंग	लाभ
अमृत	धर					
धर						
रंग						
काल						
लाभ						
उद्देश						
अमृत						

उत्तम चौधड़िया - अमृत, शुभ, लाभ, धर

खराब चौधड़िया - उद्देश, रंग, काल



शुभ तिथियाँ (भद्रादी दोष रहित) - यात्रा दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, ११, शुक्ल पक्ष की १३

तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा

शुभ नक्षत्र - अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, इस्त, अनु, ज, धनि, रेव

मध्यम नक्षत्र - रोहि, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्व, ज्ये, मूला, शत

शुभ दिशाएँ - पूर्व, उत्तर, आग्नेय, सौम्य - पश्चिम, दक्षिण, मध्य, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, पूर्व, उत्तर, ईशान, शुभ - पूर्व, उत्तर, ईशान, पश्चिम, दक्षिण, मध्य

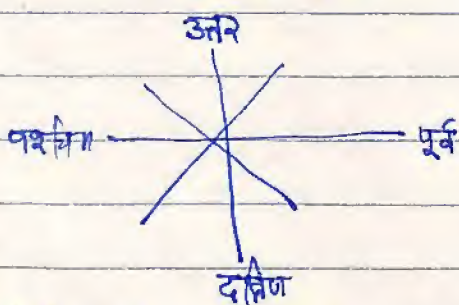
समयशूल - उषाकाल को पूर्व को नहीं जाना चाहिए

भादृशी को पश्चिम

अश्विनी को उत्तर

मध्याह्निकाल को दक्षिण

योगिनी - पूर्व, उत्तर, अग्नेय, दक्षिण, पश्चिम, ईशान पठवा नवमी से चली आई



योगिनी बाएँ - दुःख

योगिनी पीछे - मनवांछित पूर्ण

योगिनी दाहिने - धन

योगिनी सम्मुख - मृत्यु







१) गण्डमूल में उत्पन्न जातक के नक्षत्र के २० दिन पश्चिम  
उसी नक्षत्र काल में शांति करवानी चाहिए। यदि शांति न हो पाये  
तो जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान दान करवा लेना  
शुभा है

२) पैरों के समान दक्षिण दिशा की ओर, मरुत, शींफो,  
मुहान की छत डालना, चरपाइ पत्तन बुजना, मुदा जलाना, लोह  
की चयल, पीतल प्रारम्भ आदि स्तम्भा खोपण, तौला, पीतल, लूण-  
कण्ठादि का संचय करना, छत डालना रूप है

शांति

अथ शरीर-वस्त्र अवस्था-दुर्भाग्य कल में निवृत्ता  
शान्ति साधने एवं दैवता आदि ये प्रभावित जातक की  
कुण्डली में शरीर अशुभ तो विरोध अशुभ होगा। यदि निवृ  
त्त या मृत्यु हो तो अशुभ कम हो सकता है। बृष, मिथुन, कन्या,  
तुला, मकर, कुम्भ, मीन एवं राशी कब

राज्य में ही करे

अन्धाश्व रो. कुल  
सुलोचन कु. पु  
मध्याह्न भू. आ मध्या  
मन्थर अर. म आर

शिव मिलेगी  
वही मिलेगी  
पता लगाने पर भी वही मिलेगी  
व हुन करने पर मिलेगी

अन्धाश्व में वस्तु पूर्व दिशा  
सुलोचन उत्तर  
मध्याह्न में वस्तु पश्चिम में सुलोचन  
मन्थर में दक्षिण



विवाह में प्रमुख समय बांध

- १) गुरु अस्त - बांध (उषित्त पूर्व, बांधा त्याग)
- २) शुक्रास्त - बांध ( ————— )
- ३) चन्द्रास्त - बांध ( ————— )
- ४) गुरु अस्त - उत्तराषाढ में नक्षत्र लगान के पश्चात् बांध देना
- ५) मीन - बांध
- ६) मीन पंचम - चंद्री में
- ७) बांध माल
- ८) दानाष्टक - बांध (उषित्त, पूर्व, बांध में रानी ह)

गुरुआदि उस्त

गुरुअस्त, शुक्रास्त, अधिनास में व धि तकर

गुरुअस्त (निर्माण) एवं प्रवेद्य, कुआं, तालाब का निर्माण, वृत्तास्त, ब्रह्मापन, नागपञ्च, मुण्डन, कन्यापूजा, कर्णस्थ, समाप्त - विवाह, रघुपूजा, गोपान, देव प्रतीक्षा स्थापन, आतुर्गस्थ प्रपण, अग्नि दान प्राप्ति, वीणा, कन्याय

ज्येष्ठ ज्येष्ठ लगे लगे लगे, कज्जल, मस वस्त्र, हिरण्य पट्टिका

अशुभ

रेम के विवाह में नक्षत्र से वात कानक्षत्र ५/१३/२३ टी कान का मुख्य १०/१८ कान की लगे, मुख्य बाजाह में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उत्तम है आतुर्ग राग वस्त्र लगे की मृदु



वर्तमान तिथि + तार + वक्र की संख्या को ~~का~~ जो प्राप्त है  
उसमें वर्तमान प्रहर की संख्या जमा करें तथा 8 से गुण कर 8  
7 द्वारा भाग दें

- 1 तारे आइ बुध वस्तु भूमि में गति
- 2 वक्र नष्ट वस्तु किसी वर्तमान में रखा
- 3 वक्र पानी में गिरी
- 4 वक्र भूमि के ऊपर स्थान में बिपाठ
- 5 वक्र भूसं में छपाई
- 6 वक्र मोहर में छिपी
- 7 वक्र राख में छिपी

लंका को 3, 4, 9, 11 सूर्य युग्म, 1, 2, 5, 7, 9 में पूज्य (पूजा करवा)  
तथा 8, 12 तथा अन्य। कल्पों के 1, 3, 5, 7, 9 मुरु साध/रुद्र: पूज्य  
1, 4, 9, 12 विशेष रूप से पूज्य

पंच द्वांश सिद्ध भूत - जैत्र युग्म, प्रतिपदा, अश्विनी, तृतीया, पंचमी, दशमी, दीपावली, वसंत पंचमी। परंतु बिवाह के लिए फलहीन

अभिषिक्त में सभी कार्य की जा सकते हैं  
यदि 12 सितंबर 2003 को अभिषिक्त जावता हो तो  
दिनमान + 30/40

अथ  $94/24 = 4$  घंटे तक मिर  
इसके 4 घंटे  $4:20$  सूर्योदय (4:14) =



१२ बजकर २४ मिनट आग्निविह का अनुष्ठान

~~अग्निविह~~ अनुष्ठान से १ घंटे (२४ मिनट) तथा २४ मिनट पर्यन्त

आग्निविह होता।

इस नीचे दिये राशियों का घंटा ६ या २ भाग में अर्ध  
ती विवाह में दायकास्तक

निम्नोक्त गुण, ११ वं २०, अथवा लग्न या जन्म कर्मात्मक या वकी  
नवांशों के दो शत दोषों का कह

विवाह आदि में लग्न शुद्धि विचार

१) विधि की शरीर, पन्द्रह को भव, यांग वामपक्ष को शरीरक अंगान्तर  
लग्न को भस्मावन गारा है

लग्न बल के बिना जो कोई भी शुभ कार्य किया जात है  
उसका फल वैज्ञानिकी से प्राप्त हो जाता है

२) विवाह में विधुक्त लग्न शुद्धि के स्थिति दोन में कर-कन्या के मेलोपन, विधि  
वार, पुत्रपति, पतिके पितृ वृद्ध दोन पर दायकापति का परीक्षण जात

लग्न स्थान में चण, सु०, रं०, म०, शं०, आदि हर ग्रह न हों, लग्न से  
छठे स्थान में शु०, च०, लग्नोपन हो तथा २ स्थान में च०, म०, सु०, गु०,  
शु०, व लग्नोपन न हों, ७ कोई ग्रह न हो, यदि <sup>३०</sup> ~~सु०~~ या चक्र हो तो  
दायाद से शांति हो जाती है। इत सब बातों का ध्यान में रखकर ही लग्न  
शुद्धि होती है।

१२ - राशि, १० - मं०, ३ स्थानों में शुद्ध, लग्न में चण  
आदि चण ग्रह लग्न की शुद्धता को इ प्रित करत हैं।



१२ वें श०, ३ शु०, १० मं० यथा कित दान से शांत हो जाते हैं।  
 विवाह लग्न से ३, ६, ८, ११ वें वर्ष, ६, ६, ११ श०, क०, ११ वीं  
 शुभा दिति हैं।  
 ३, ६, ११ वें मं०, २, ३, ११ वें च०, ३, ६, ७, शुभ और एवं स्थान का  
 छोड़कर अन्य भावों में शुभ - शुभ तथा ७, ८, १२ वीं चरित अथ  
 स्थान में शुभ, शुभ - शुभ - शुभ की च दंडों

जन्म लग्न व जन्म राशि का लग्न - शुभ, जन्म राशि से ३, ६, ११  
 वीं विवाह लग्न - शुभ वाचक। (वर-कन्या की जन्म राशि, लग्न से  
 १, ८, १२ राशि स्थ लग्न अथवा परंतु इसके परिहार स्वरूप जन्म  
 राशि या जन्म लग्न के का स्वामी, विवाह लग्न का स्वामी समावटी,  
 अपवा सीत प्रेमी से, तत्पश्चात् अष्टम स्थ लग्न राशि का स्वामी केन्द्र  
 में स्थित से तो अष्टम का दंड रहे।

कुट्टरि दोष - लग्न से पाप ग्रह - आभी - १२ भाव

कुर भाव - वकी - २ भाव में

तो कुट्टरि दोष हुआ यदि योग परिवर्त्य, शीघ्र मृत्यु हुआ  
 कष्टकारी होता है।

परिहार - कुट्टरि दोष का रक्षक नीच, शत्रु प्रेमी, अक्षय हो तो  
 परिहार यदि शु०, शु०, शु० इत्यादि से कर शुभ ग्रह के दंड विनाप  
 में अष्टम रहे या १२ वें भाव में होता परिहार



1) अष्टम भाग में परिवार. जंगल अस्त, नीच, शत्रु (नियंत्रण एवं सन्तान) का होकर अष्टम स्थान में दो ता दोषकारक वही, परंतु लग्नश होकर अष्टगत नहीं होता चाहिए

2) 6, 7 चक्र का परिवार, नीच शशि, नीच ताराग्रहादिक, 6, 7, 12 में स्थापित होने दोषपूर्ण वही भाग माया हो परंतु लग्नश होकर सन्तान प्रसूत नहीं होता।  
3) नीच या शत्रु शशिमतधुन, 6, 7 दो दोषकारक वही, परंतु लग्नश होकर इन भागों में वही

पू. युग गट - 1 भाग - अष्टम व 8

घ. लग्न में सूर्य, वृद्धि - 8, 12, 10 तथा 11 भाग में चंद्र सूर्य अथवा सप्तमेरा - अथवा दोषों का नाश

व. विवाह लग्न का कूट गट करा वध हो व परिवारित लग्न सर्वथा था कि है परंतु मंगल, बुध, शनि सौम्य ग्रहों का चरण वध

बड़े बड़े लड़के का विवाह नना मर, जलानुक्ति, तम, नग्न में वही तीव्र जेब (बड़ा बड़का, बलीडकी, ज्येष्ठ भास) पूर्ण तः व जल आरंभ करता पूरे ज्येष्ठ भास में साक्षिक कृति का सूर्य के लज्जा के सूर्य दा नार्ति करके विवाह हो ना करे शक्ती नही। ज्येष्ठ भास की मांस अंगुलि नज का लज्जा के विवाह को साक्षिक कृति मीतमा।



समे भाई-बहन का विवाह माय के भीतर नहीं कराया जायेगा  
 संवत् परिवर्तित हो वो कोई दोष नहीं ॥ विवाह के बाद महीने के  
 भीतर पुत्र, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। कन्या विवाह का पंचम  
 पुत्र विवाह माय के भीतर शुभ ॥ दो समे भाईयों का विवाह दो  
 सगी बहनों से - अशुभ। एकवार के साथ दो स्वमी बहनों का विवाह अशुभ  
 दो समे भाई-बहनों का दो समे भाई बहनों से विवाह - अशुभ  
 जुड़वे भाई-बहनों में प्रामाणिकता एक मण्डप पर शुभ। यह छ  
 महीने का भविष्य उषी हितक के प्रवृत्त के विषय

विवाहकी गार

रवि	च	मं	मू	कु	च
नवीवस्त्र पहना शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ
नवीवस्त्र पहना शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	अशुभ
नवीवस्त्र पहना अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	विवाह	अशुभ
देना दत्ता मध्यम	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
जपाना अशुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकुटना अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
पात्रा मध्यम					

प्रसूति और वातक और सुतक का दौर

रुखी जाऊ विपर =

- 1) यदि कन्या की कुण्डल में 7 सौर ग्रह के साथ रुखी सती कन्या का विवाह बड़ी आप में होता है



- 2) यदि स्त्री में 12 वें मास में वंश और गुण 12 वें मास में हो तो स्त्री का विचार-वीर्यापु में
- 3) जिस स्त्री के जन्म क्षण में शुभ 11 शुभ वारों प्रकार के ग्रह तो उसके पतिविराट् रहित हैं।
- 4) यदि स्त्री के 12 मास में स्त्री अपना जन्म पाप करे तो वैवाहिक सुख न मिले
- 5) यदि सप्तम मास में पुत्र तथा दशम की पुत्री स्त्री का धर्म न पुरुष
- 6) 12 मास में बुध हो तो स्त्री की व्यवहार संतान होकर पुत्र संतान में बाधा

### विष कन्या योग

- 1) शनिवार, आश्लेषा, द्वितीय तिथि - तीनों के और कन्या - विष कन्या
- 2) मंगल, अश्लेषा, दोपहर -
- 3) यदि प्रभाव में मंगल पवन हो तो पुत्र पंचम मास में हो तथा पंचम मास पर मृगशिरा की दृष्टि हो तो स्त्री के उपाय संतान

### माता योग

यदि कुं में बुध, मृग, पुन 8, 9 वं स्थान पर स्थित हों और शेष ग्रह इनमें शनि भावां में पड़े हो तो माता योग होता है और घरजन्म, घरगत, इह गृहस्थों से पुत्र, पुत्र से अपि सन्तानों से पुत्र, पुत्र अपि होता है। शुक्रादु Compatibility में प्रायः सकल



सू०	शुक्ल	अग्नि	मरुत
प०	जल	जल	दीर्घ
मं०	<del>शुक्ल</del> शुक्ल	अग्नि	हृत्
वृ०	वृद्धि	लेख पृथ्वी	म
मृ०	—	मृत् तल	म पा द
रु०	—	मृत्, जल	हृ
शु०	शुक्ल	वायु	दी
रु०	—	—	दी
मृ०	—	—	मृ

मृ०	हृ०	मि०	मृ०	सि०	५	७	८	९	१०	११	१२
अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वा	ज	अ	पृ	वा	ज
हृत्	हृ	मृत्	मृत्	दीर्घ	दी	दी	दी	म	म	हृ	हृ

- 1) जन्मलम्ब में जल तब से एवं उस में जल तब भर की स्थिति हो तो जातक मोटा एवं कुष्ट
- 2) तम पा लम्बाधिपति मृत् जल शक्तिगत से शरीर स्थूल एवं पुष्ट
- 3) यदि जन्मलम्ब अग्नि शक्ति और अग्नि मृत् उष्ण स्थिति हो तो जल शक्ति धनी, बली परंतु देखने में दुर्बल
- 4) पृथ्वी शक्ति जल लम्ब तथा जल मृत् जल शक्ति शरीर साधारण नः स्थूल
- 5) पृथ्वी शक्ति तम मृत् पृथ्वी शक्ति शरीर शरीर स्थूल एवं हृद



- ६) यदि लग्न राशि पृथक्त्व की हो और पृथक् तब कथित जातक कद छोटा
  - ७) यदि लग्न नपुंस्व राशि वाला उसमें बाप का जातक दुर्बल किन्तु <sup>मौलिक</sup> ~~मौलिक~~ <sup>तुल्य</sup> ~~तुल्य~~
  - ८) यदि लग्न अग्नि पुरुष तत्वा की राशि हो और लग्न के ग्रह पृथ्वी राशि में हों तो दंडियों साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट शरीर स्थूल
  - ९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्वा की राशि और लग्न के ग्रह पृथ्वी राशि में हों तो दंडियों साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट
- जातक का कद राशि के अनुसार टाला है

- १) यदि जातक के जन्म लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में शुक्र हो तो <sup>सं</sup> ~~सं~~ <sup>में</sup> ~~में दाग~~
- २) जन्म लग्न में मं., बु. और चं. हो जातक का जन्म से रहे या दूठ वर्ष शिर में चोट से ~~आघात~~ <sup>आघात</sup>
- ३) जन्म लग्न में बु. और कनाठों स्थान में शत्रु तो मस्तिष्क या बालों का न में चिन्
- ४) यदि लग्न में बु., सप्तम में शु. और अष्टम में पापग्रह हो तो जातक के बालों राशि में चिन् या लग्न में गुरु या शुक्र तथा अष्टम में पापग्रह हो तो नी
- ५) ५, ६ राशि हो और शुरु की दृष्टि तो मूत्रेद्रिय के समीप नि
- ६) ५, ६ भाव में शुरु, बु. अष्टम में गुरु, लग्न या चतुष् में शनि <sup>य</sup> ~~य~~ <sup>पर</sup> ~~पर पर~~
- ७) चतुष् स्थान में राहु या शुरु में से एक ~~आ~~ <sup>हो</sup> ~~हो~~ <sup>हो</sup> और लग्न में मं. <sup>हो</sup> ~~हो <sup>हो</sup> स्थित हो पाँव के लम्बे में <sup>हो</sup> ~~हो~~ <sup>हो</sup> <sup>हो</sup>~~
- ८) अष्टम भाव में से ~~हो~~ <sup>हो</sup> ~~हो~~ <sup>हो</sup> दूसरे भाव में शु., अष्टम भाव में शु., तीसरे में मंगल जातक की कद



गौरव पत्र

यात्रा गृह

तिथि १०/०२

पौष	माघ	फाल्गु	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भाद्र	अश्व	का	जि	वह	त	सख	अथ	पू	प
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	महाभय	जीवाशु	कामज	सिद्धि	३	
२																	
३																	
४																	
५																	
६																	
७																	
८																	
९																	
१०																	
११																	
१२																	

वनेरा व जीव लाया,  
 वास्तु लाभ, संकर  
 घर की धिता मित्र सख,  
 भाग्योदय, मित्र प्राप्त,  
 बहुतेतरा, जीमिषा  
 उनाशा पूर्ण  
 सौभाग्य  
 वनेरा किंतु नीर  
 धन, मित्र लाभ

कृष्य

कर्मशान	१ पहर	२ पहर
नवतारा	उर्ध्व	सुख
चर्चपूर्ण	भाय	नमोश
	लाभ	सुख
कल्याण	नमोश	शुभ
मिष्टमित्र	सकट	नमोश
घर आते	सकट	नमोश
रत्न सन्निध	विनाश	लाभ
आर्य	शून्य	शून्य
	लाभ	भाग्य
	सम्पत्ति	सम्पूर्ण
नाश नदी	मरु	उर्ध्व
स्वर्ग	मरु	सुख



### +) पितृ परीक्षा ज्ञात

जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्र न देखता हो तो बलि  
को जन्म समय उसका पीता घर में था, यदि सूर्य च, द, के,  
५ भाव में चर राशि का और लग्न का तब भी तो पिता दूसरे  
देश में। इन्हीं उपरान्त स्थानों में स्व स्थितवाही में पिता घर  
में नहीं था परंतु वंश में था, द्विस्वभाव सूर्य तो भाग में था  
परंतु ये पाँच। तभी है जब चन्द्र न देखता हो लग्न को  
मेष-वृष, वृष-मेसर, मेष-तू-द्विस्वभाव क्रमादि

### +) माता पिता का दृष्टि स्थिति

पिता के लिए स्व तथा दशम भाव माता के लिए चन्द्रमा  
तथा ४ स्थान से विचार।

यदि जन्म की जन्मकुण्डली में स्व के साथ  
अथवा दशम भाव में पाप ग्रह होते हों या देखते हों या  
सूँ पापग्रहों की बीच तो पिता का कष्ट। यदि सूँ के  
४/६/८ स्थान में पापग्रह, शुभ ग्रह कोई भी राशि  
को के घर

जो के साथ २/१२ स्थान में ४/६/८ स्थान में  
शुभ ग्रह हों शुभ न होता माता की कष्ट

अटों से राग

१) ~~स्वर्क - गुरु, चं - कफ, शुं, चं - वात कफात्मक~~  
~~शं, रां, कं - वात राग, बु - त्रिदोष, स्मं - पितृ राग.~~

~~खं - हिन इत्तर, कुपण पत्त, ~~पुं~~ पुरुष वाशि - वल्लभान~~  
~~गं - सा, शं, स्त्री~~  
~~गं - मंग, कं, पुं~~  
~~कु - वां~~

~~XXXXXX~~

W  
 m



मं. चर, वृ. - स्थि, मिथुन - द्वि

सूर्य → सूर्य सदैव मार्गों और उच्च उदय ग्रह है। इसके  
काल पुरुष की आत्मा कहते हैं। यह गुलाबी वर्ण, वृद्ध (80 वर्ष)  
पुल्लिंग, क्षत्रिय, भैरव गुण, अग्नि तत्व, पितृ प्राकृति, सूर्य,  
अश्व - नाभ, पूर्व दिशा का स्वामी।

जात्र की आत्मा, नेत्र, दृष्टि, शारीरिक गुण  
शक्ति, आरोग्य, चो स्तित्व, प्रभाव, ऐश्वर्य, आचरण, अद्विष्ट  
अधिकार, पितृ, मैरुदण्ड, स्नायु, उदर, मस्तिष्क, हृदय, रक्त  
कुसुम, जठराग्नि, मंद विने, भोग्य, अर्क, हँस,  
नेत्र, सिर - धर्म, नेत्र - विषय, अपस्मार, वाना, स्वर्ण, अधिकारी  
सूर्य, त्राहण, प्रसिद्धि, चक्र, औषध विज्ञान, जाँहरी, स्वर्णकार,  
धातु ताल, स्वर्ण, धान्य, लाल चन्दन, ऊन, तृण, नारिकेल,  
बोदीम, लाल रंग की वस्तुओं पर अधिकार

ग्रह परिषद में राजा, उग्र क्रूर, सिंह  
को स्वामी, उच्च मेष, नीच तुला, सिंह - मूल (मौल)  
चक्र, मं, गुण - मित्र

रा. के शुभ, रा. - शत्रु

शु - समर्थ

घट 3/10 - 1

5/9 - 2

4/8 - 3

7 - पूर्ण

२२ से २५ वर्ष - तिहाय दोष निवारण हेतु - भाषिकय

वृत्तिकर उत्तरकालमासी उषा, - स्ववृत्ति

जन्म कुण्डली में स्वरूप जहाँ बँडता

है वहाँ से छलभाव उल्लेख फाँड़ ग्राह - रक्ष - खर, शक्ति  
कमी होय नही। यह। मास में संचरण

~~अन्ध - स्वरूप भाषी तथा कलपुरुष में स्त्री। यद्यपि तिहाय है~~  
~~कृष्ण पक्षी की तैलाक्षी चतुर्दशी वृद्ध~~

सभी ताकालिक - सिते - २, ३, ५, १०, ११, १२  
रात्रि - १, ५, ६, ७, ८, ९

उर्वरी ग्राह - लक्ष्मीदायक

वृत्ती ग्राह - परदेष्टा

मासी - अपौरुष

अस्त - धन सम्मान का भाव

*Signature*



2 1/2 30 अंश

4 i

ग्रहों के बल

1) नैऋतिक क्ष- शक्ति से मंगल दुगुना बल, बुध उगुना  
गुरु चार गुना, शुक पाँच गुना, चंद्र 6 गुना, सूर्य 7  
गुना

2

(2) दृष्टि बल → शुभ ग्रह की दृष्टि पडने से बली बुरा ग्रह  
बली हो जाता है।

(3) भाव स्थिति → उच्च राशि ग्रह पूरा बली

मूल त्रिकोण में बली

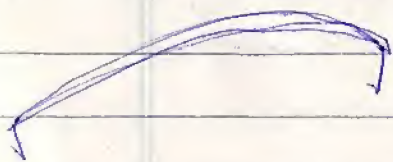
स्व राशि - 1 बली

मित्र राशि - 1/2 बली

सम राशि - 1/4 बली

निराश राशि - बलहीन

शत्रु राशि - 1/2 बलहीन



(4) चैष्टा बल → सूर्य अपना चन्द्र मकर से मिथुन तक  
किसी भी राशि में हो नै चैष्टा बली। यदि चन्द्र के साथ  
मंगल, गुरु, शुक से तो पाँचों ग्रह बली। कूर ग्रह  
सूर्य के साथ कर्क से धनु तक बली।

(6) चं, शुं - सप्त राशि - बली

अन्त - विष्णु - बली

लग्न में - बुं, गु

(7) चतुर्थ - चं, शुं

सप्तम - रा, नि, राहु, केतु

दशम - चं, मंगल

(8) राशि में - चं, मंग, रा, नि

दिन में - बुं, बुं, शुं

दूरसंगत गुरु बली

राशि

दिन

दूरसंगत

(9) कूट ग्रह - कृष्ण पक्ष, सौम्य ग्रह बुध, शनि पक्ष

(10) शुं, बुं, शुं एव राशि - 1 मास

से

विष्णु राशि प्रथम 6 उष्ण ग्रह - बाल

अगले 6 राशि - कुमार, पुत्र, दृष्ट, मृत

सप्त राशि में अष्ट

बाल अस्थि - मृष्ट 1/4

मृत - मृष्ट 1/4

कमाव - 1/2

अथवा मृष्ट 1/2

पुत्र - 1/2

दृष्ट, - दुष्ट कल



सूच्य से २, ११, १२ भाव वला ग्रह - ~~सि~~ - शीघ्री

३ भाव - सम

५ भाव - मंद

५, ६ - मांसी

७, ८ - वक्री

९ - अति वक्री

१० - मांसी

१ - अस्त शिवांग तुष

क्रूर ग्रह वक्री - ~~अति~~ मंद

शुभ - — — — शुभ

पू० च०, शुभ ग्रह शक्र, बु०, म०, श० - शुभ

ख०, प्रि० च०, मे०, पाप ग्रह यु०, श०, वा० के० - उ०

शक्र - क्रूर

शक्र के०, मंगल - पाप ग्रह

स्वाभाव वल ग्रह इत्यु गिज्ञानी

## सुख-दुख के चरण

- प्रथम भाग - मुख, पंख, दाढ़, गाल, जीभ, मस्तक  
 द्वितीय भाग - दाढ़ि नीचे  
 तृतीय भाग - दाढ़ि नाक, मध्य, दाढ़  
 चतुर्थ भाग - पैर, गुदा  
 पंचम भाग - कमर के उपर का भाग।  
 षष्ठ - शीया स्थान, दाढ़ि नाक  
 सप्तम - पैर का मध्य भाग नाभि  
 अष्टम - गुदा - स्थान, पांव बायां  
 नवम -

यदि कुण्डली के जो न-2 से भागों वरु वरु  
हैं। उन वरु होते हैं। प्रथम भागों का।

- प्रथम 5 वर्ष मृत्यु - भाग में पाप  
 2 से 12 - पूरक भाग में पाप  
 12 वर्ष तक - बाला रिष्ट  
 12 से 20 - योगा रिष्ट  
 20 से 32 - अन्त्यायु

वर्ष की कुण्डली में 5, 10 शुभ ग्रह - भाग का

सुख पूर्विक प्रसव

~



५५

१) जो लंगव चालने से ५, ७ में कूर गत माना है  
 प्रसव के समय आदि कष्ट १४ वर्ष ७ भाग पर श्राद्ध,  
~~श्राद्ध से १२~~  
 में, अति कूर गत को दृष्टि - आप्रेशन द्वारा प्रसव

२) लग्न से ६, ८, १२ भाग कूर गत इन स्थानों में शुभ  
 गत है तथा शुभ, शुभ पाप गतों के मध्य  
 लं लंगव सहित माना को मृत्यु कूर गत

३) लग्न में पाप गत, जो पाप गत से साध, शुभ गत को कूर  
 गत तो बालासिद्धि है

४) लग्न एवं उच्छ्रम भाग में पाप गत, वरहे में प्रीति  
 शुभ गत न देखे तो भी बालासिद्धि माना

५) चंद्र १६/८/१२ भाग तथा फल और पाप गत जो लंगव

६) यदि लग्न का स्वामी जेठ भाग, श्राद्ध, राहु, मंगल आदि पाप  
 गत युक्त है, वर्ष विषय अष्ट

तीन कंचाडों के पञ्चत लडका

तीन लडकियाँ — कंचा ली त्रिखला श्रव  
 जो लडका, पिता, नाक पञ्च से लिए शनी, कंचा  
 भाग के लिए अति पञ्चक १ मंगल विषय आदि  
 पास त्रिखला पूना

गण्डर्व

५४

अश्वि → गण्डर्व चंद्र के इलाक़े में

उत्पन्नता लके प्रायः सद्यपि हीना प्रधमग्रह पीता कलिका  
दूसरे में पाजुलवकी



जारी में शुभ कार्य आरंभ न करें

दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष
१/६/११	५/१०/११	२/७/१२	३/८/१३	५/१०/१५	६/१२/११	८/११/१३	३/८/१३		

21

21

621

三

22

12/15

$$\sqrt{21}$$

叶

CH 100

11/11/21

213

*W*



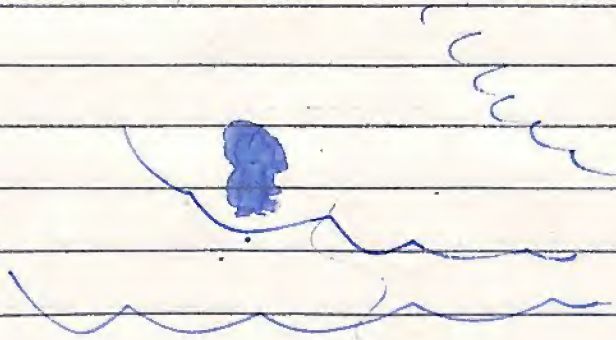
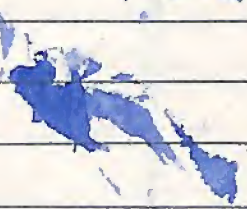
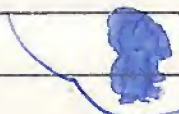
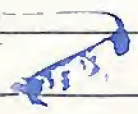
बाल श्री -  $\frac{1}{2}$  कल

कमोर -  $\frac{1}{2}$

पुके - पूर्ण

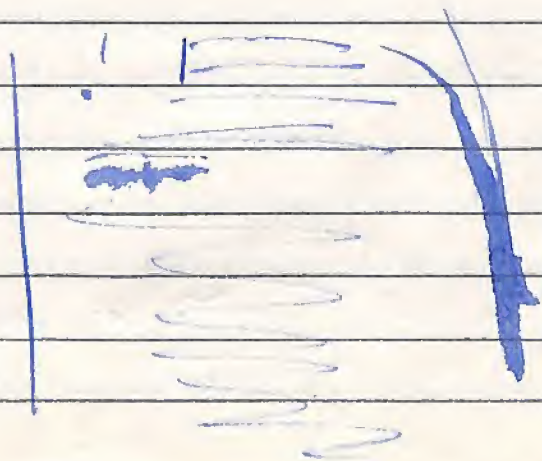
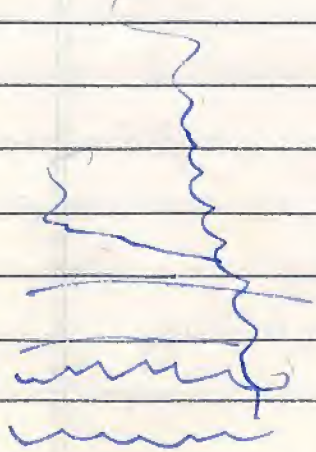
कुर - कुर

मुर - सिलकन

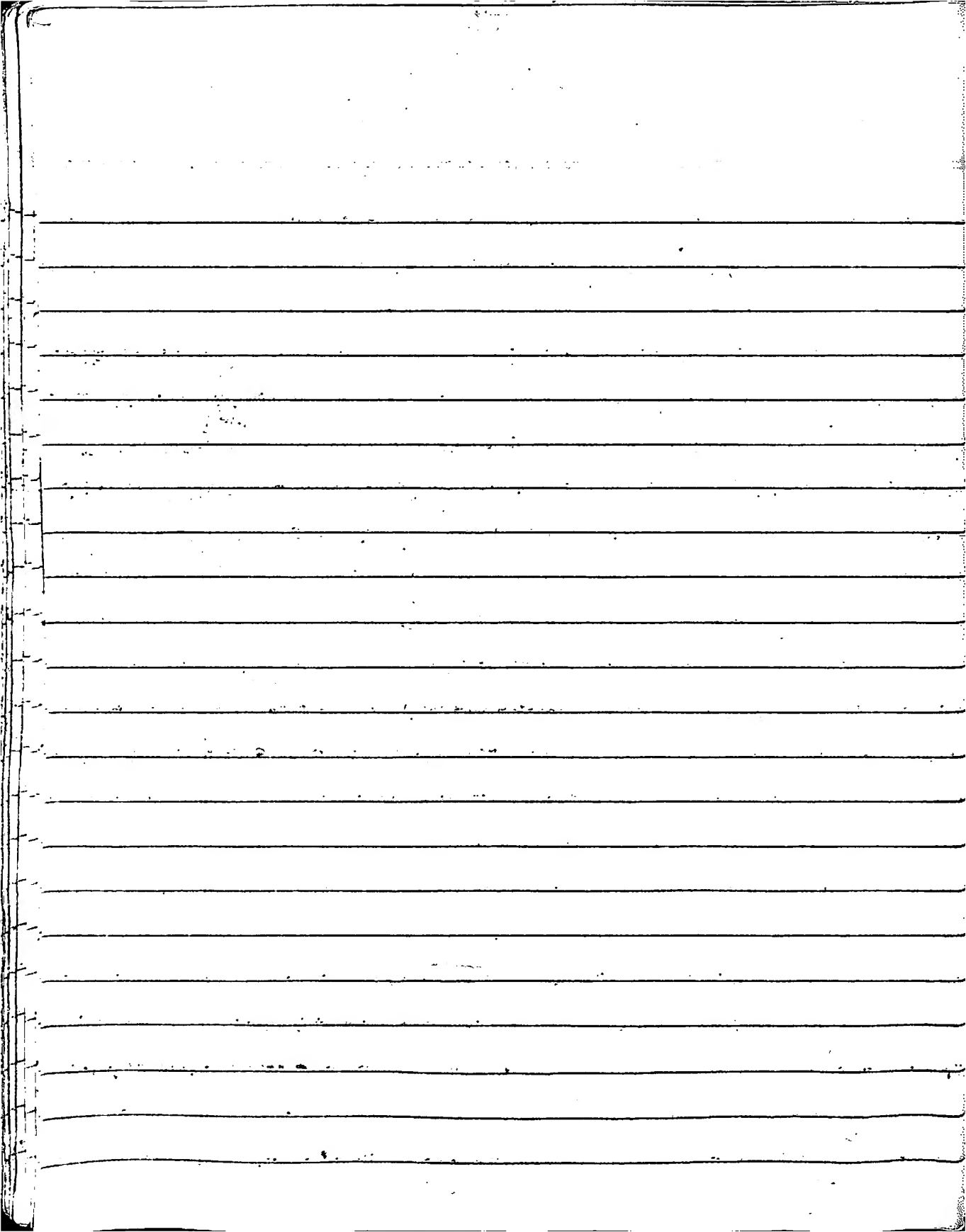


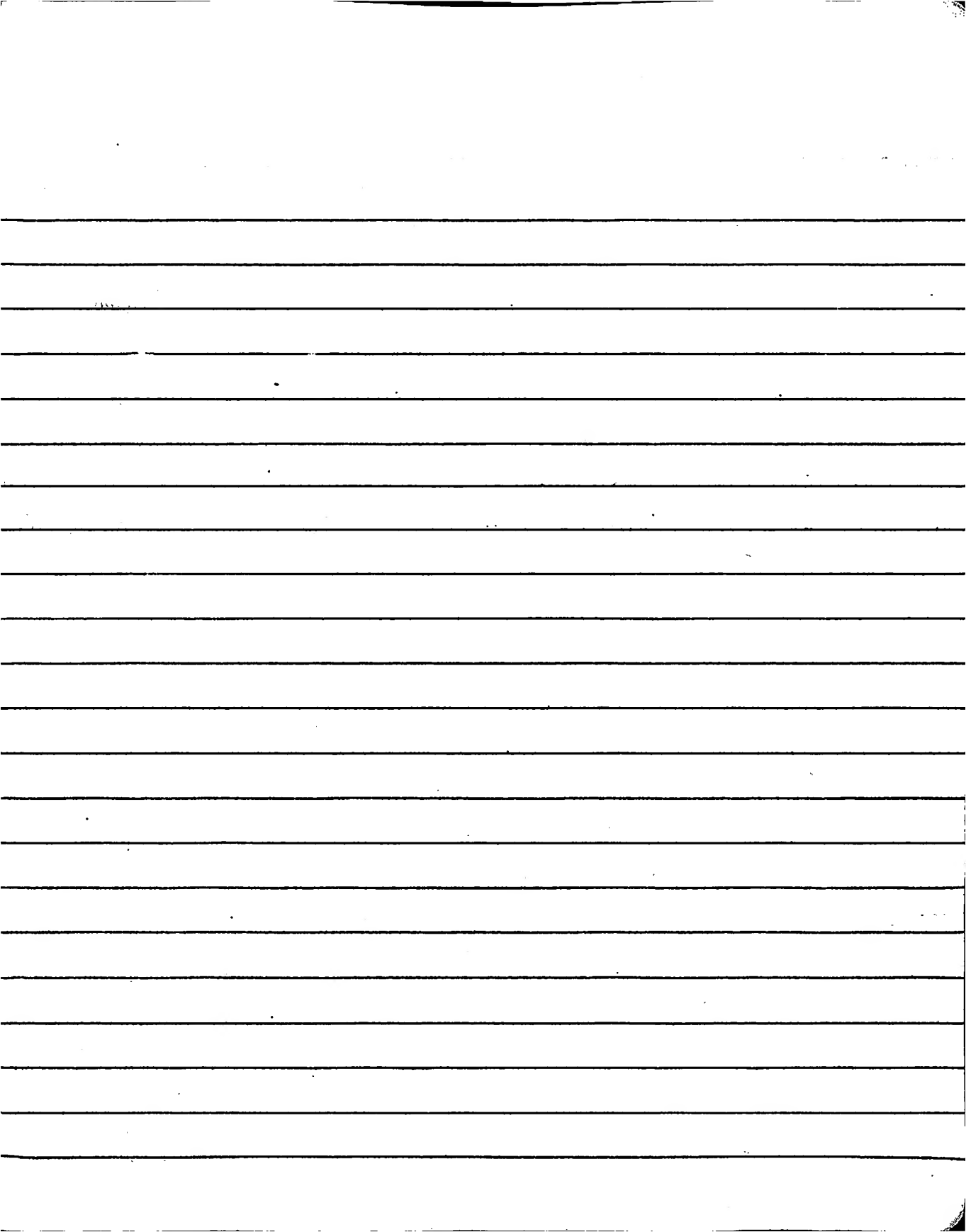
Manta  
shark

Manta  
shark

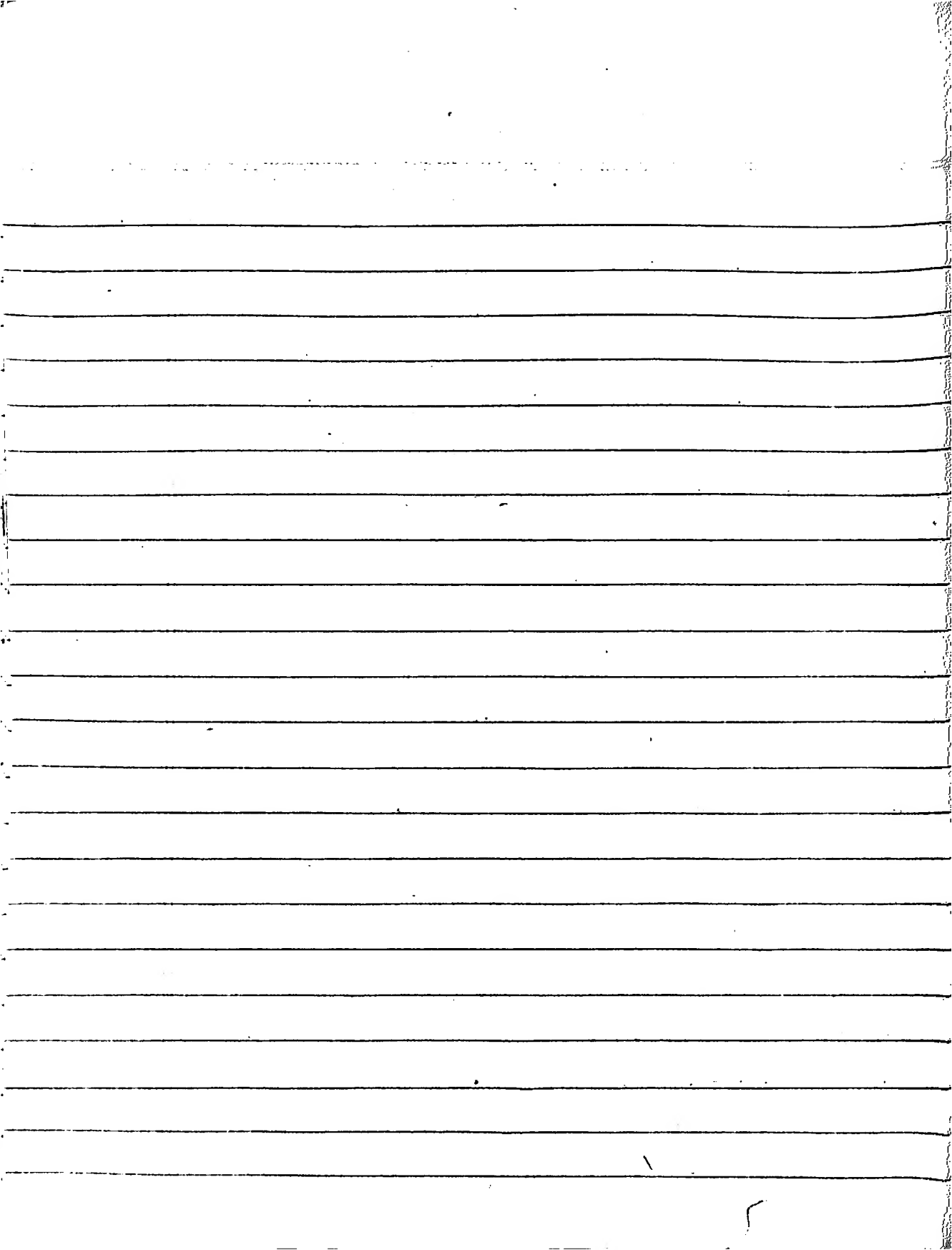


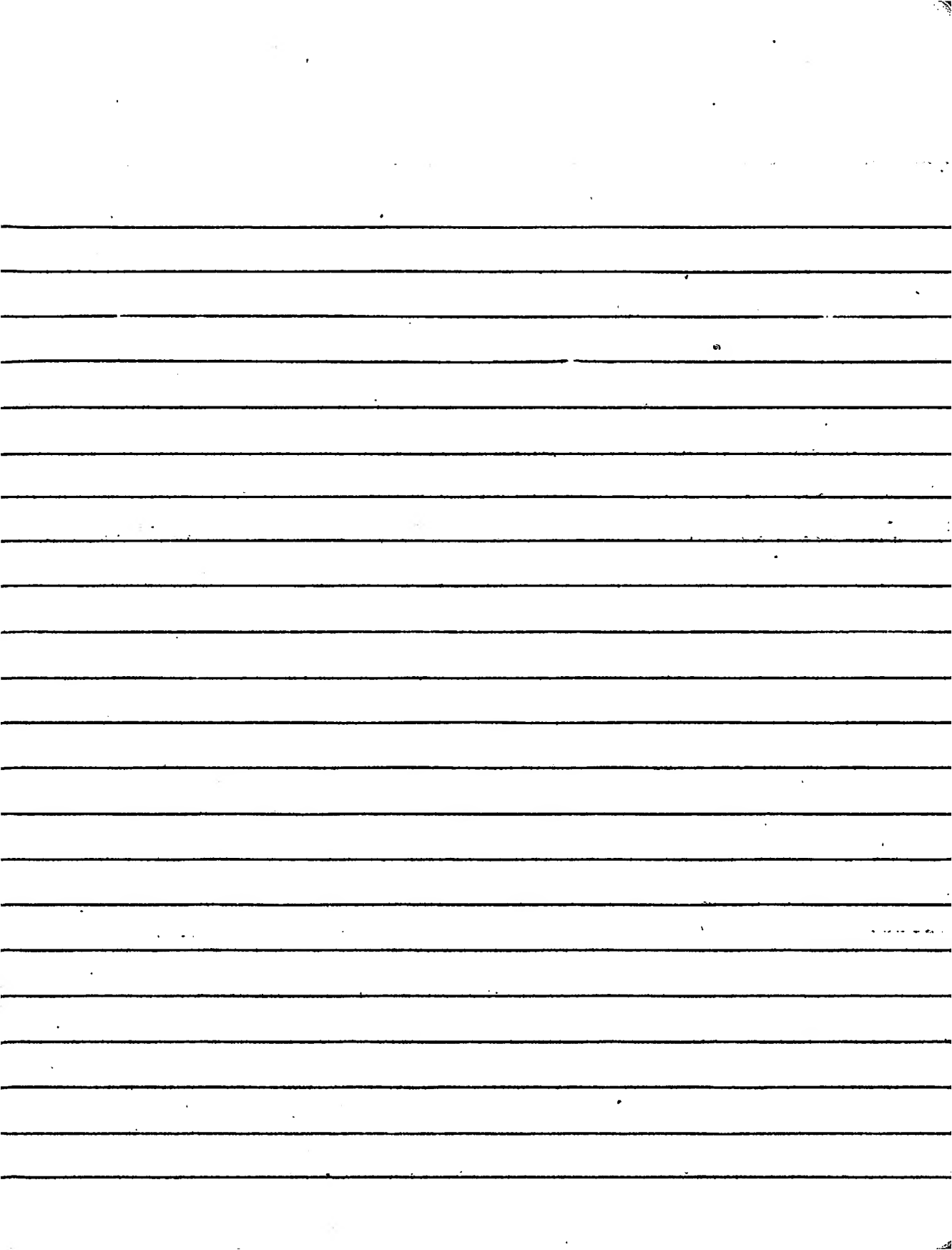




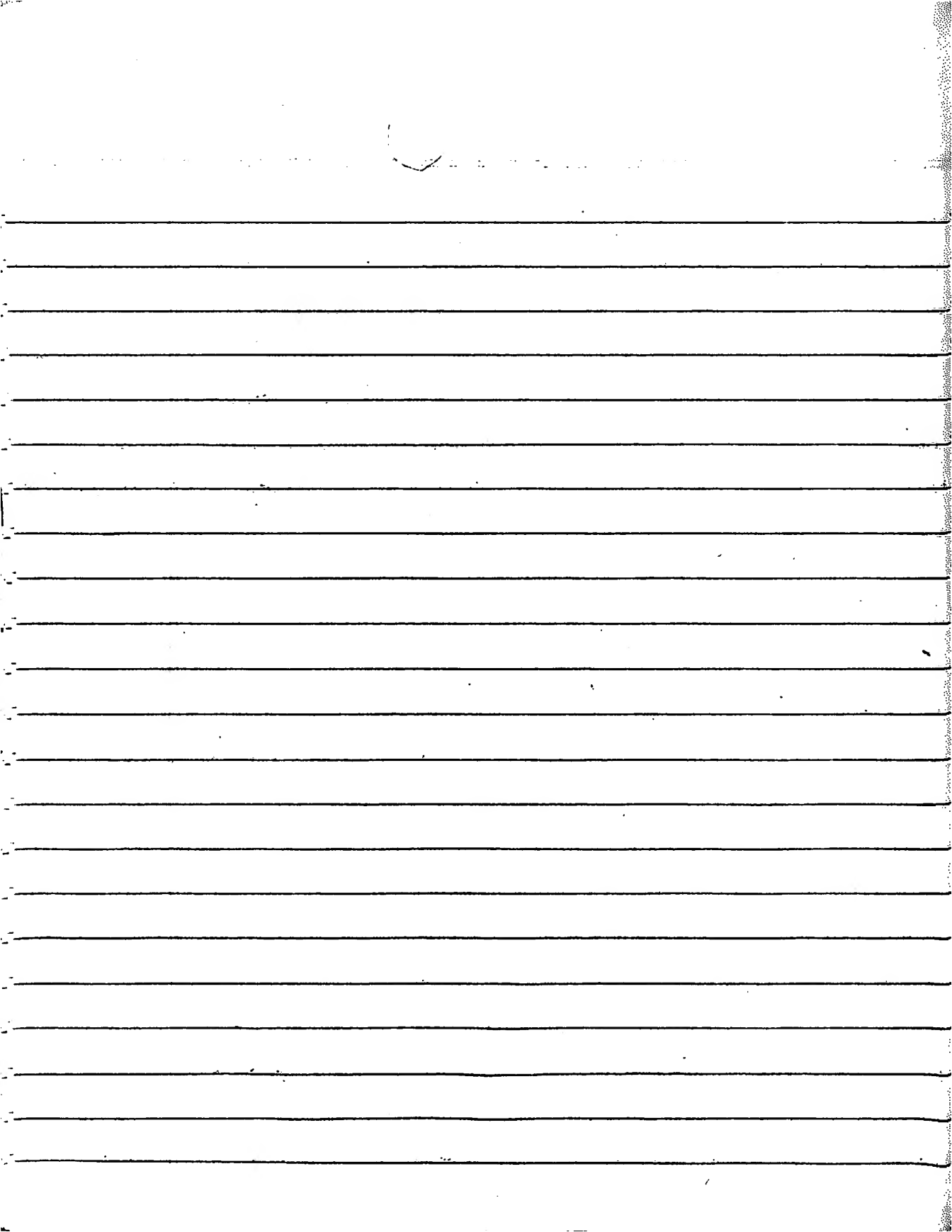


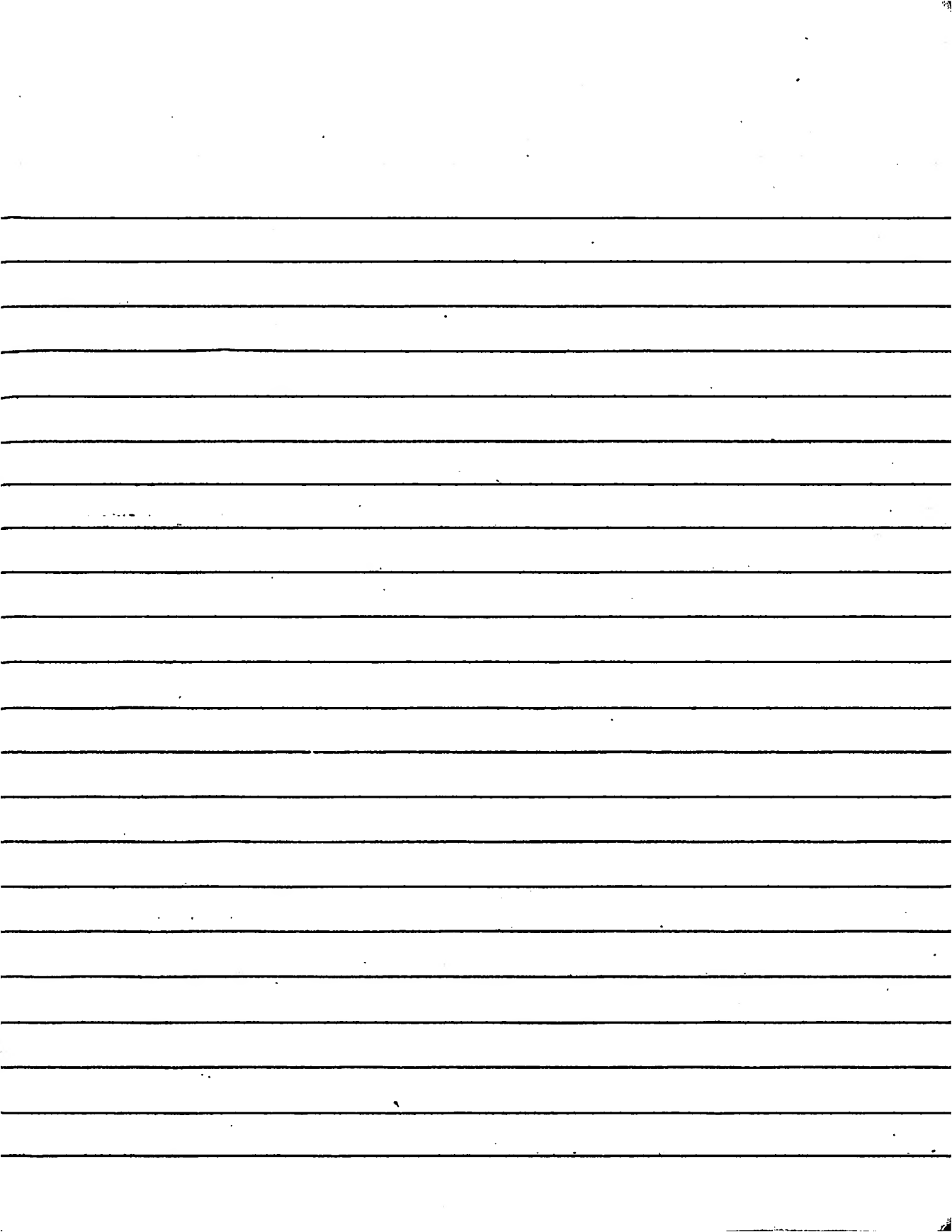




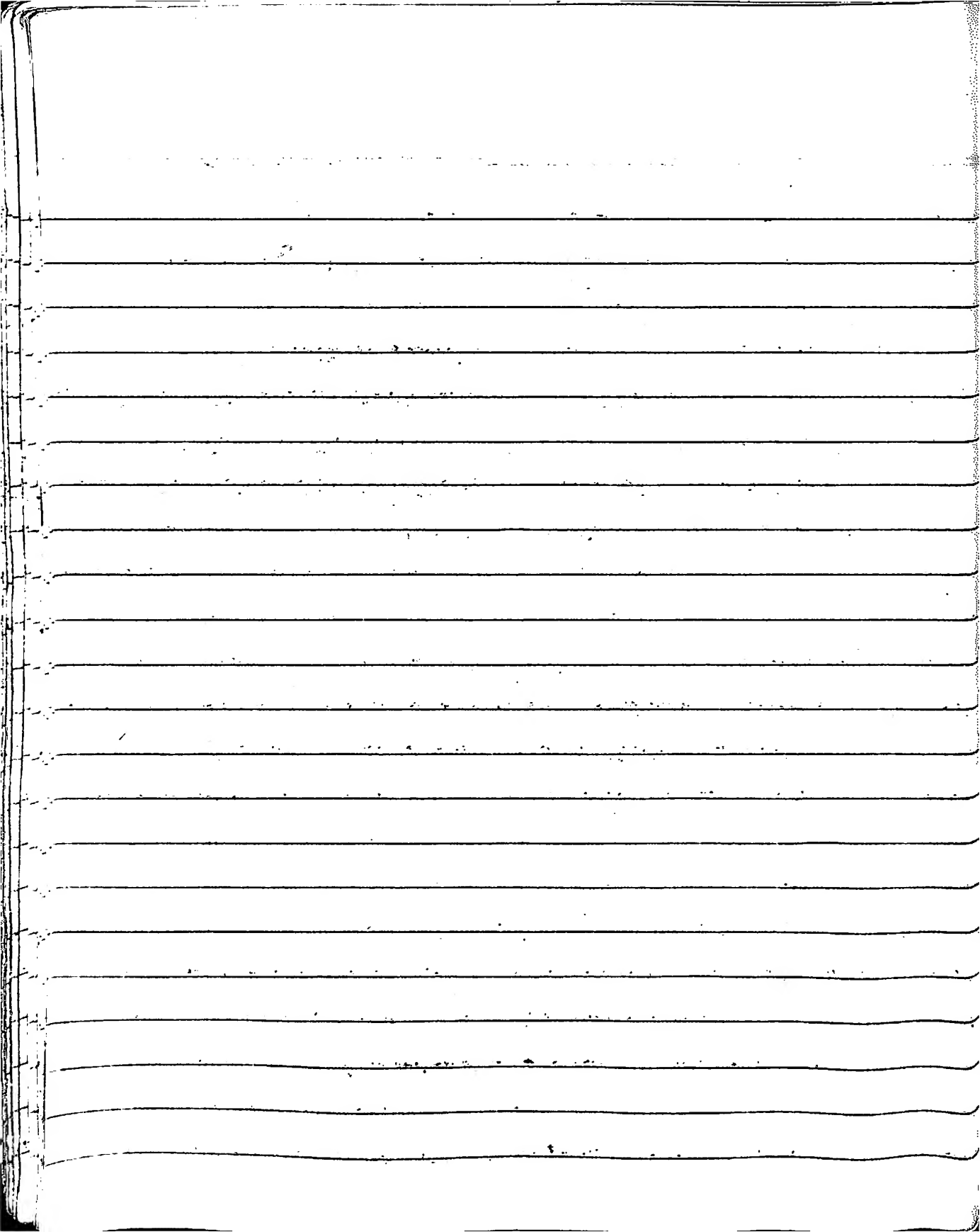


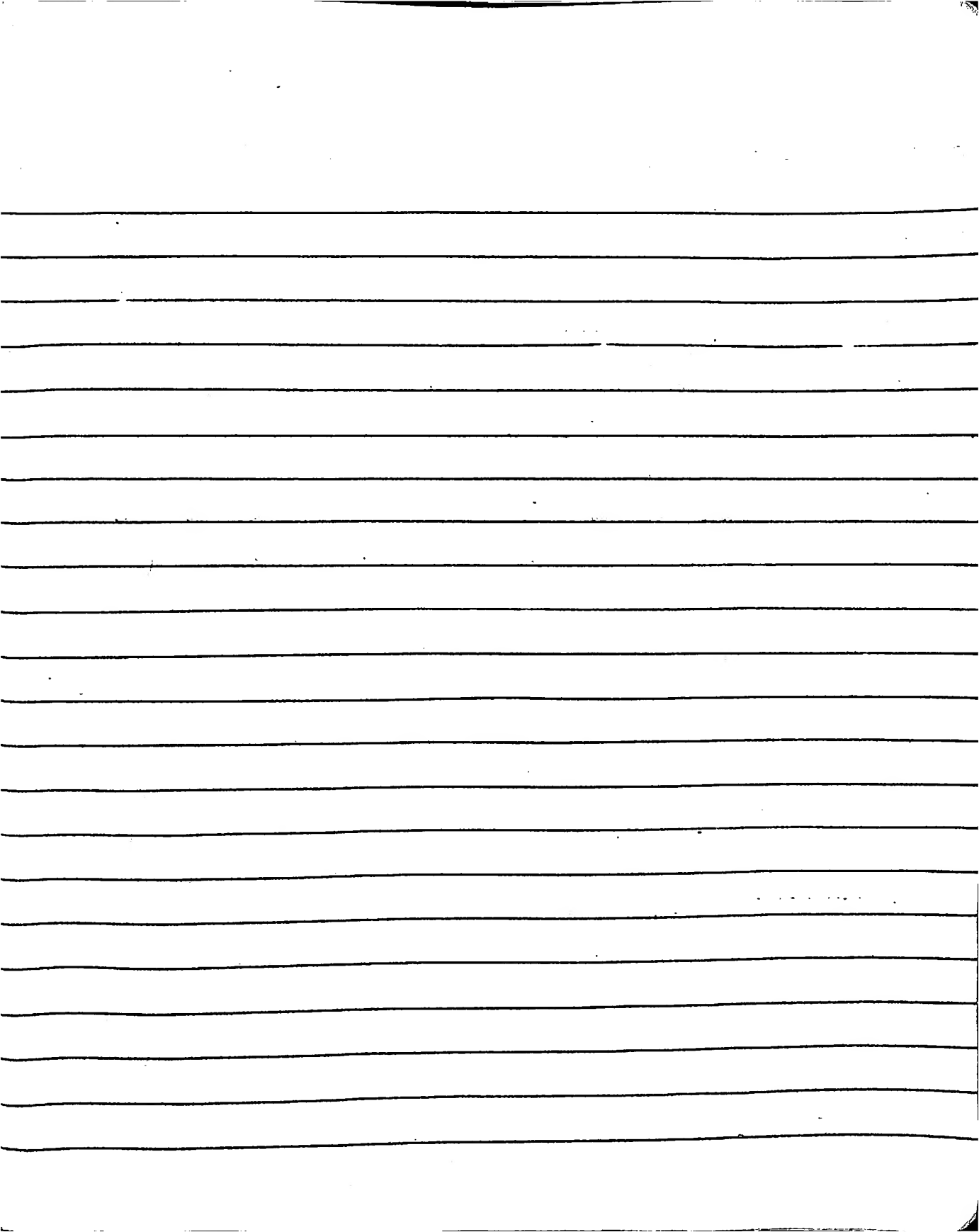




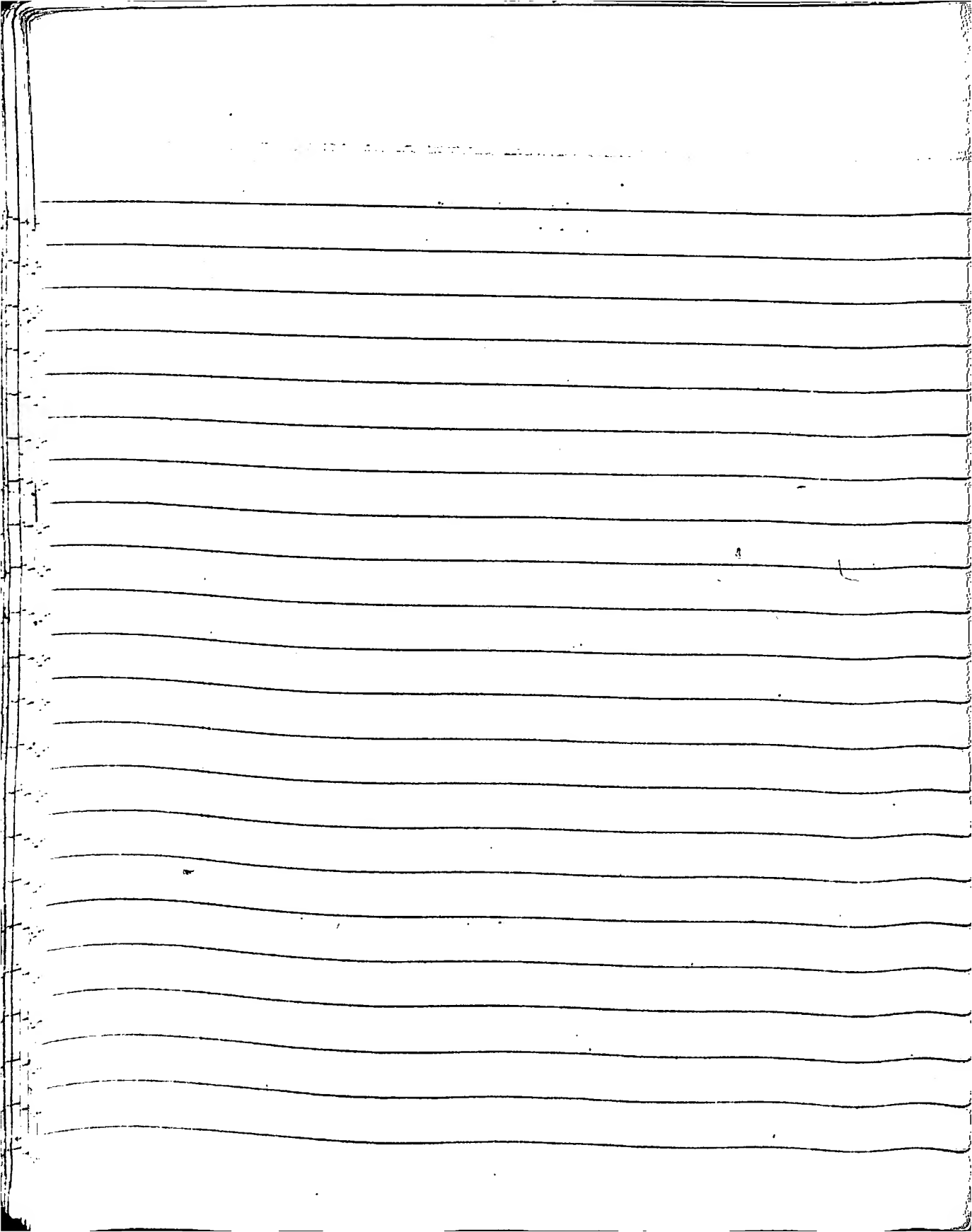


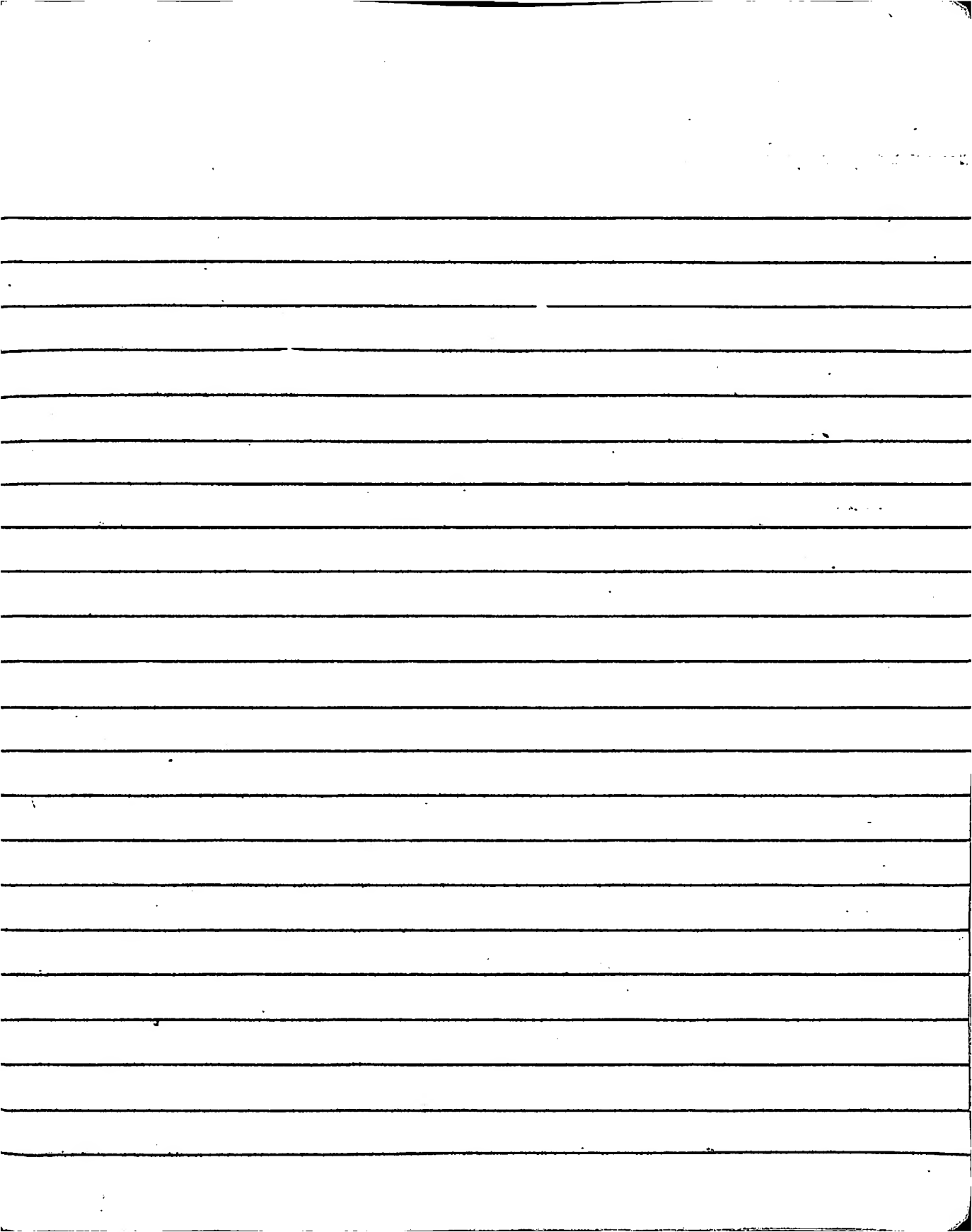




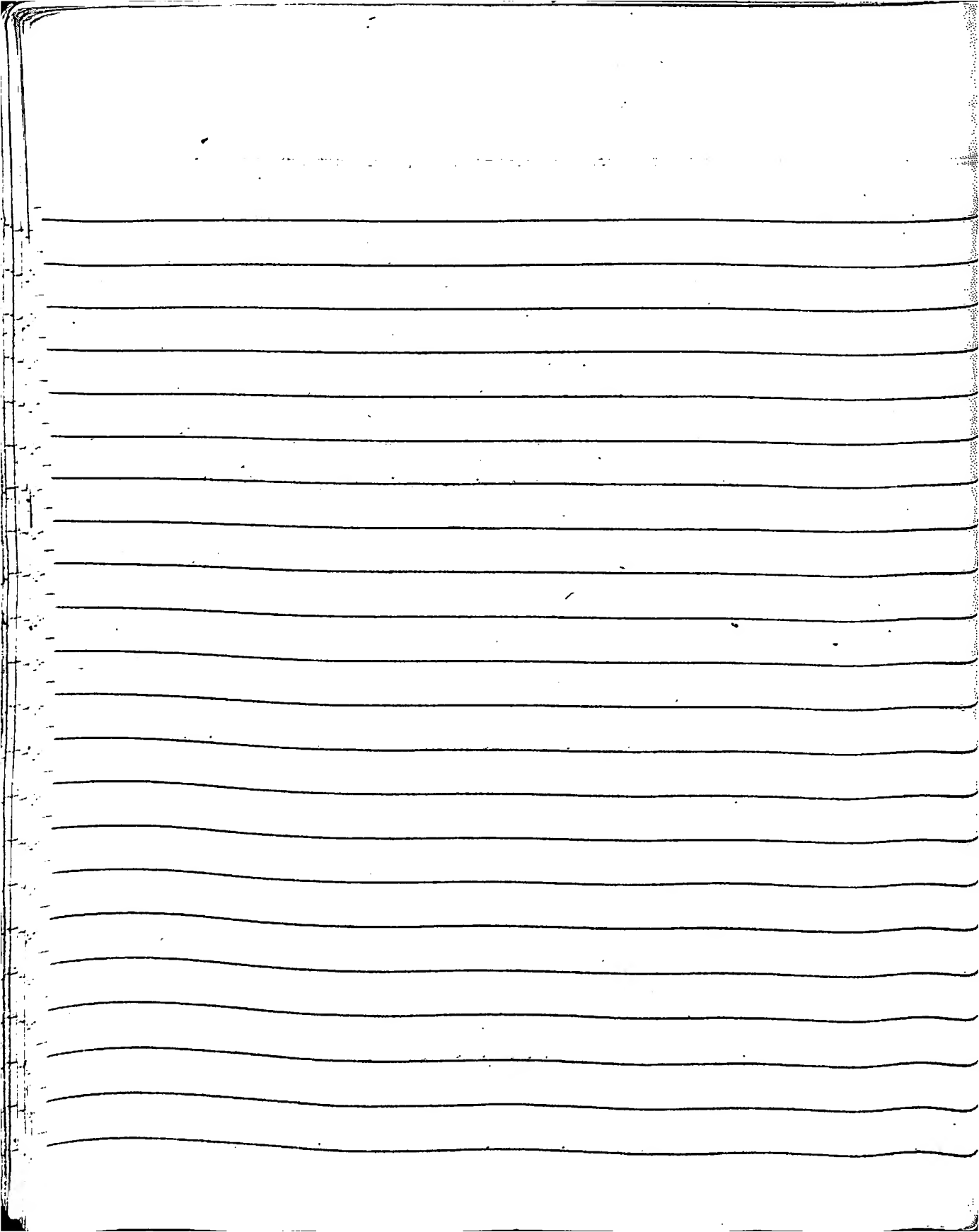


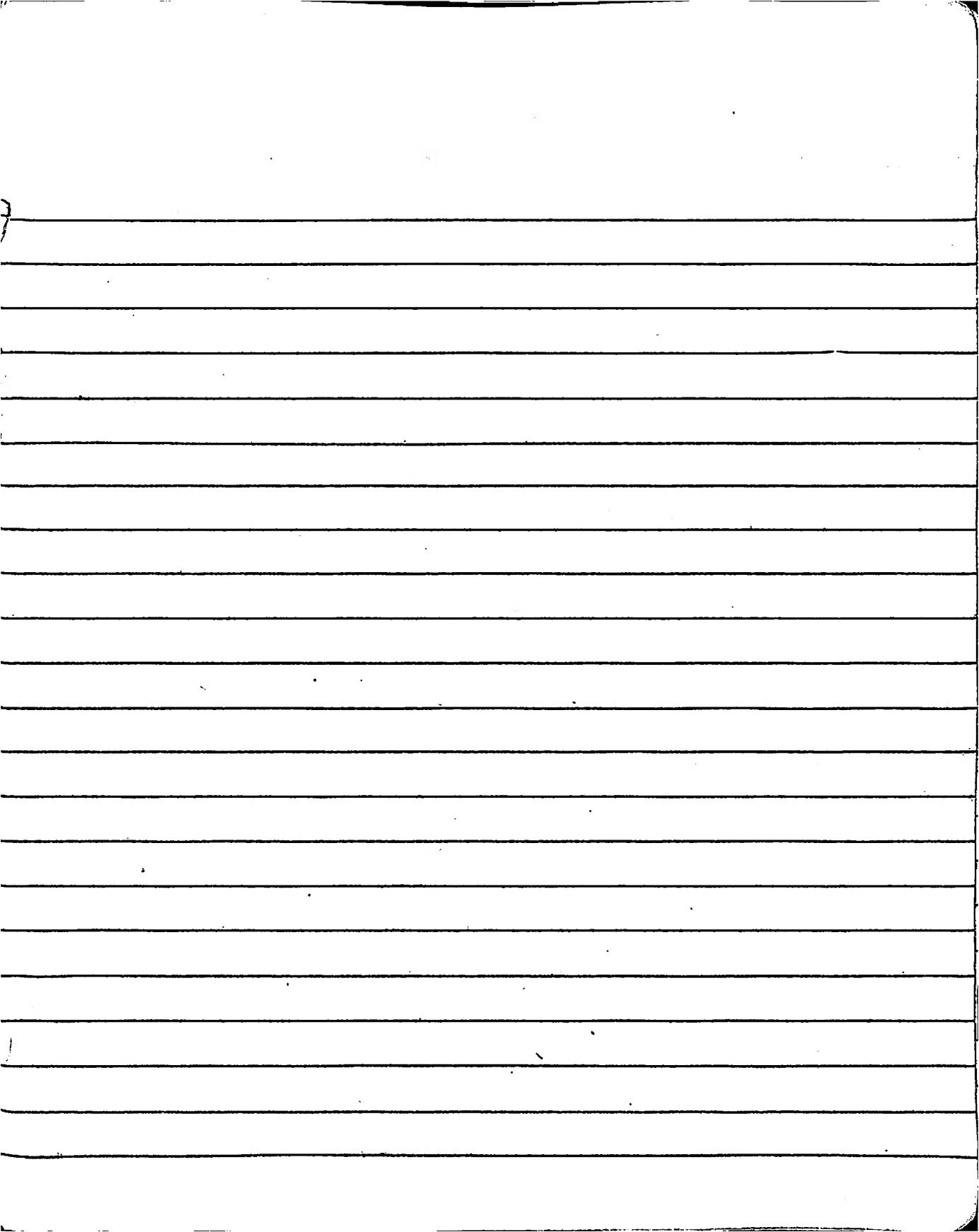




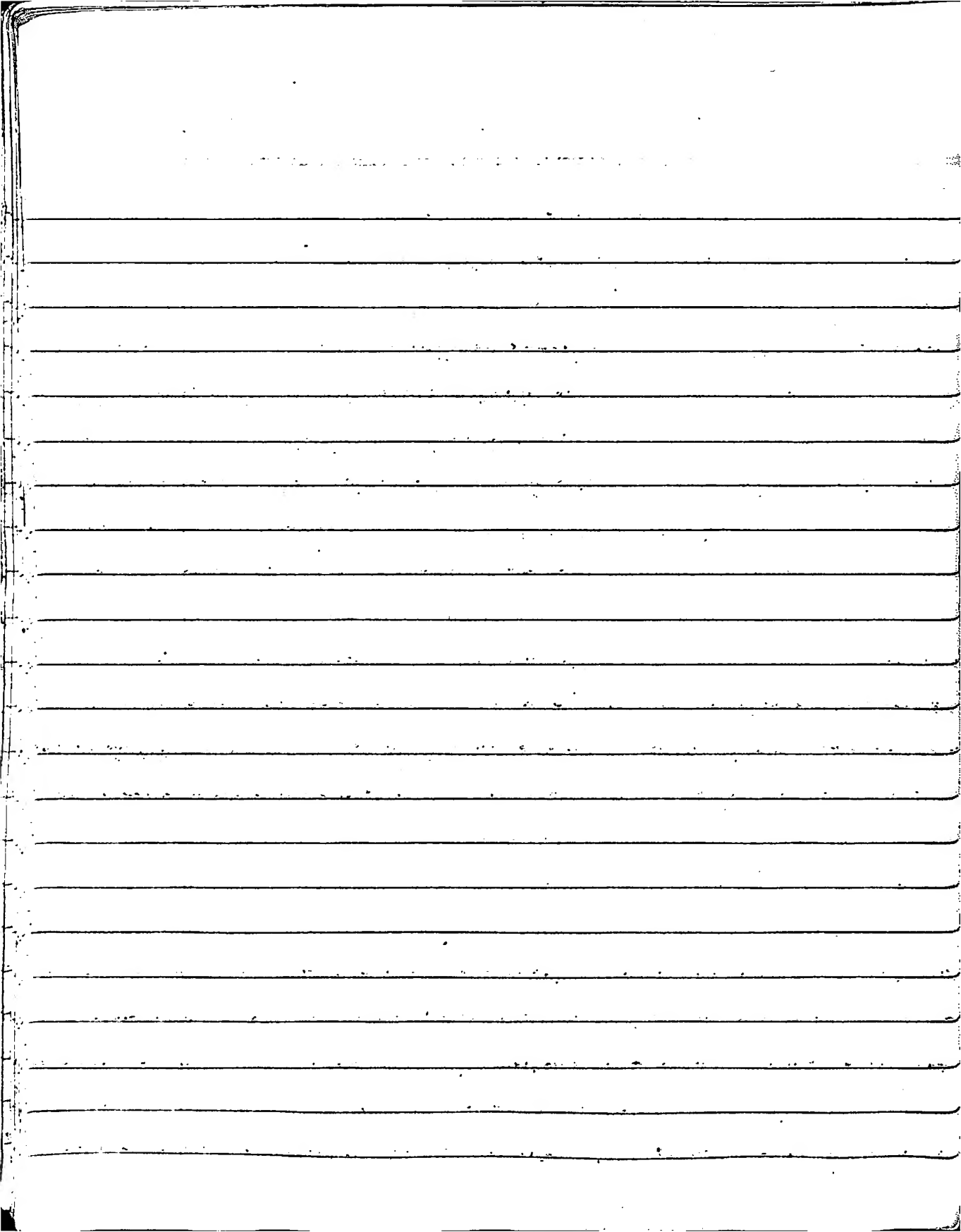


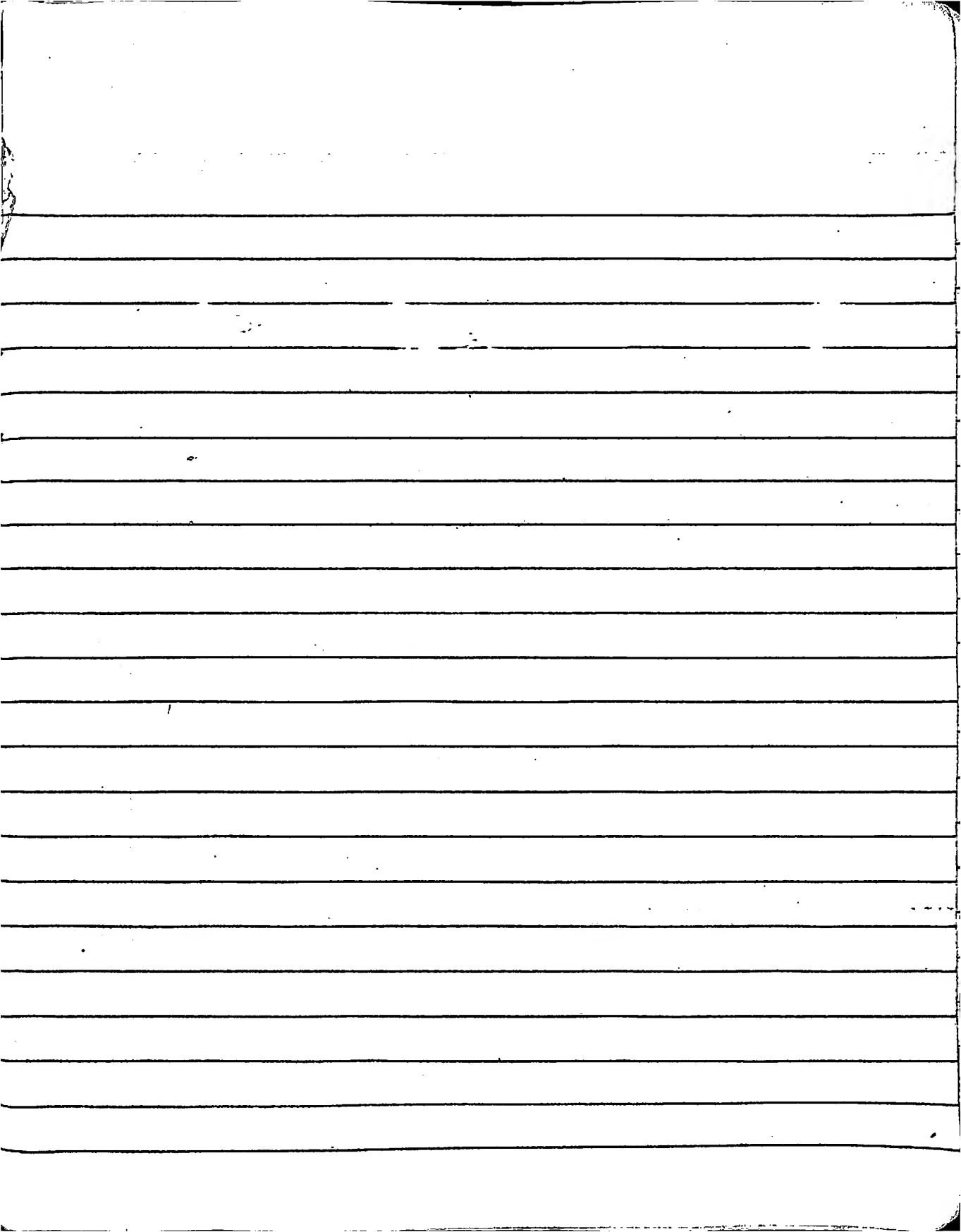




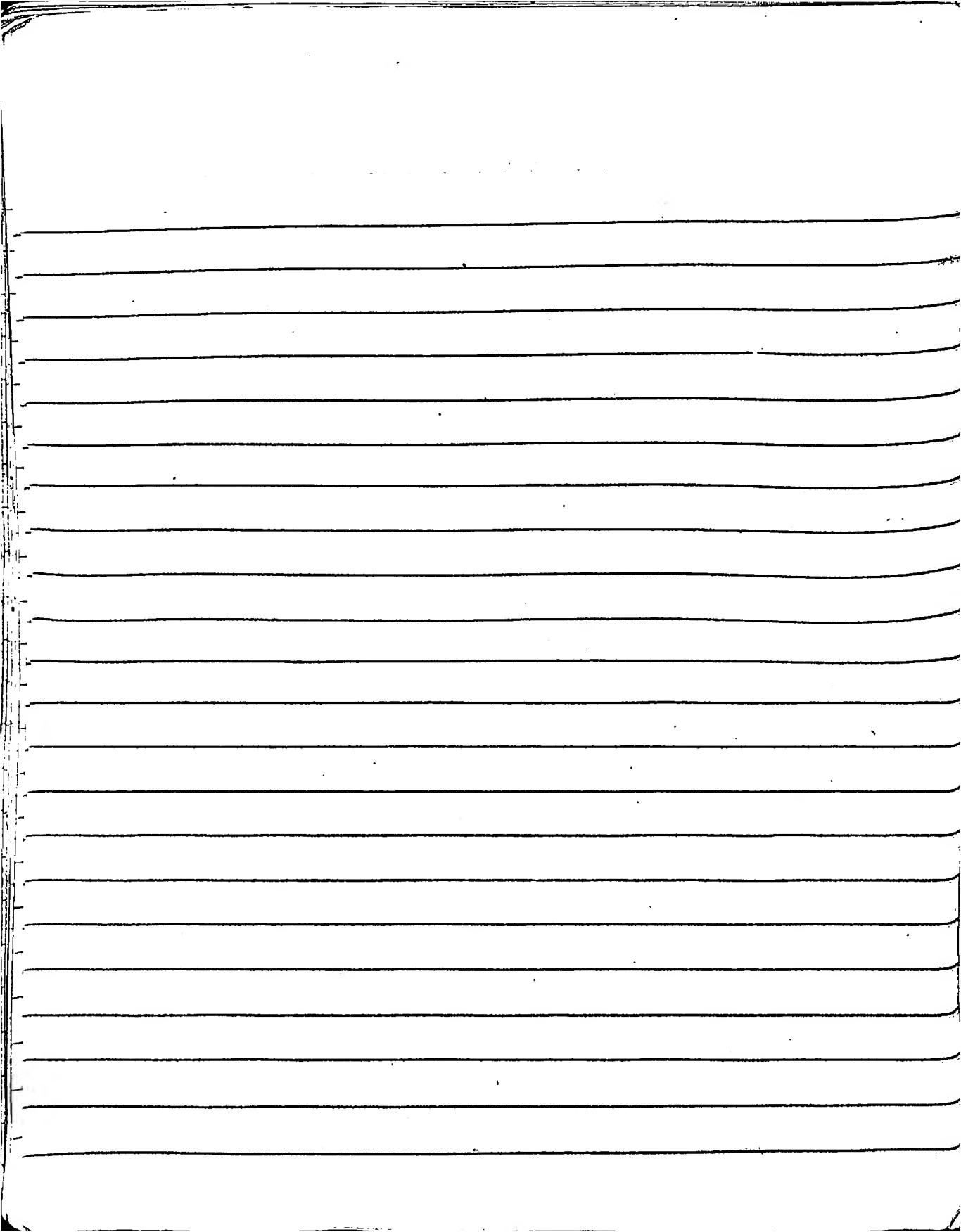






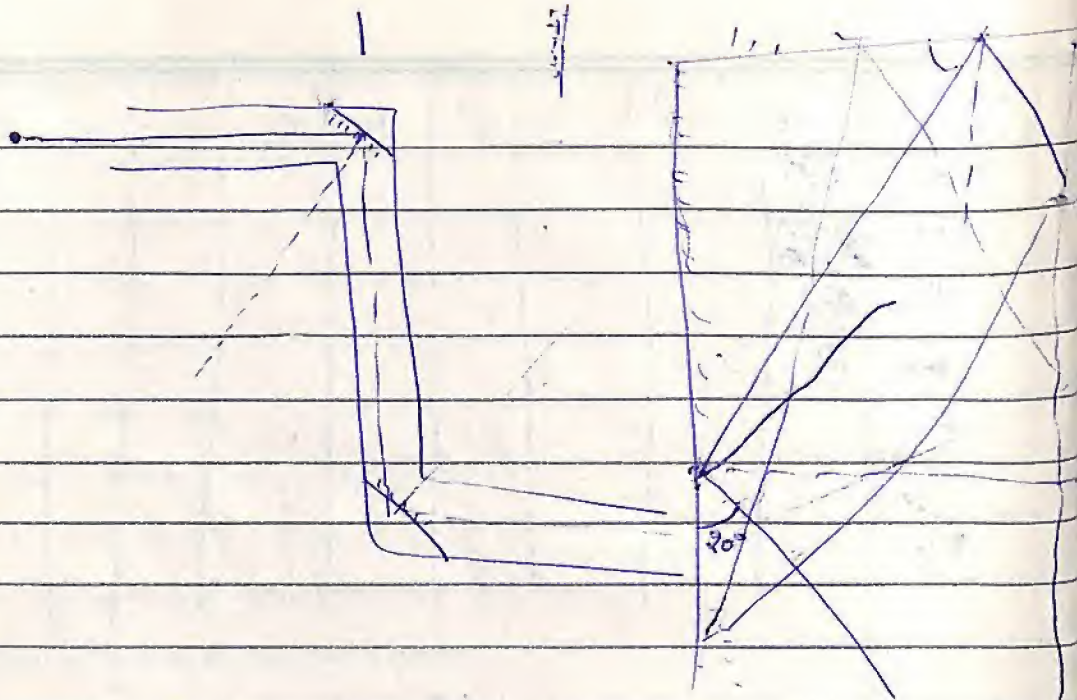


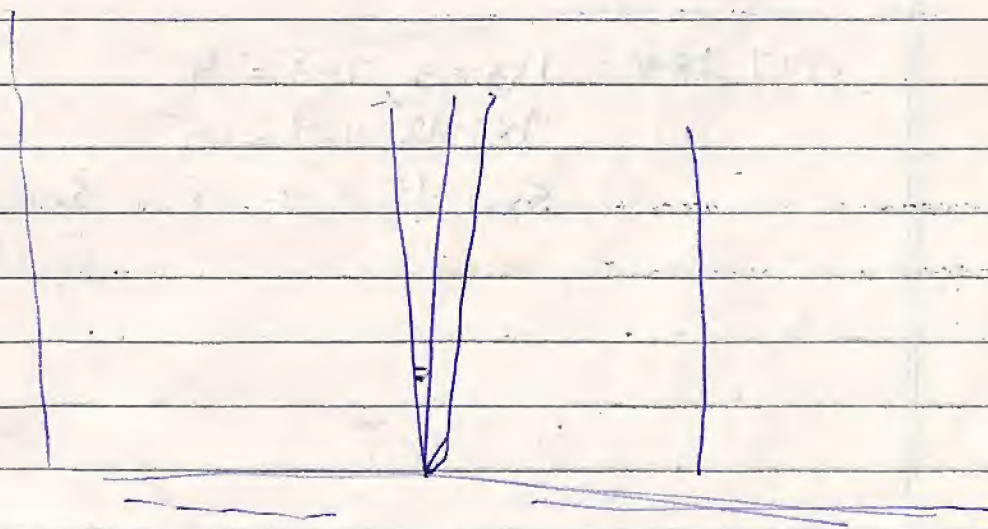
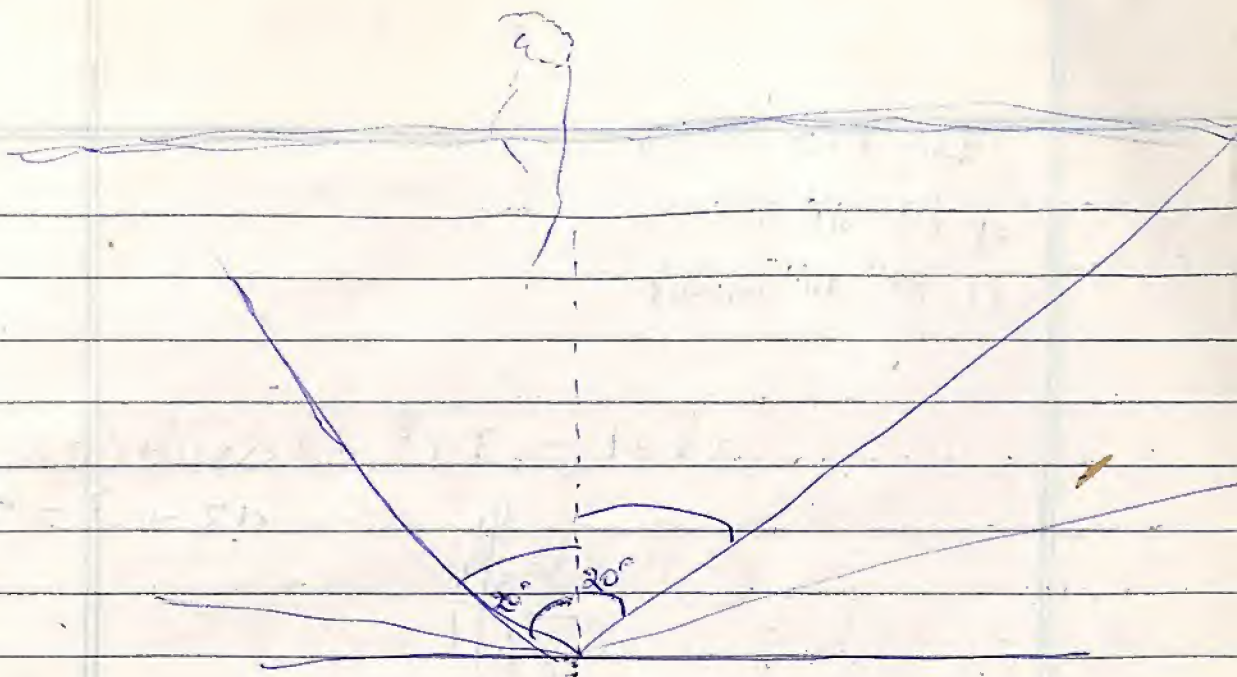




[illegible]









1) जोर सीफ्ट राउन्डिंग

2) दृष्ट-डॉलर

3) तर्ज का राजा-मंत्र

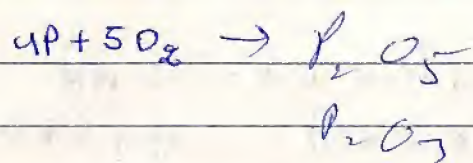
$$3 \times 31 = 37^2 = (3 \times 3) + (3 \times 1)$$
$$\begin{array}{r} 31 \\ \times 31 \\ \hline 961 \end{array}$$

---

$$1777 \text{ ~~388~~ } = 1 \times 3 = 3, 7 - 3 = 4$$

$$4 \times 3 = 12, 12 - 7 = 5$$

$$5 \times 3 = 15, 15 - 7 = 8. \text{ So it is not divisible by 15}$$





मित्र न

अर्वाच्य बली - उच्च राशि  
उच्च बली - मूल विचार  
बली - स्वर्ग  
सर्विल - तीव्र राशि

प्रमाण - किसी धर्मशास्त्रा इत्यादि का जोन निकालने  
के लिए मुद्रा देखकर देखें कि किस राशि का प्रयोग और  
ज्ञान है उसी राशि पर जाय

गुरु  
मकर के ५/६/१२ ~~सं~~ न हो तथा वर १/६/१२  
सूर्य न हो।

सम वर दे प्रति  
फल

ਰਾਜ ਸਮਾਜ

ਸਾਹਿ 292/1/C

9/2/8

3/4/10

3/3/19

0.00

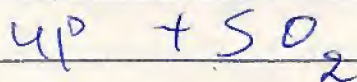
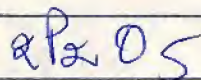
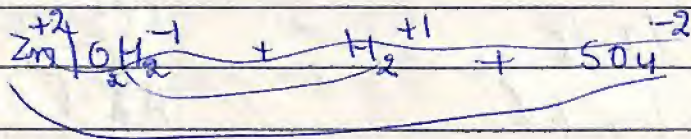
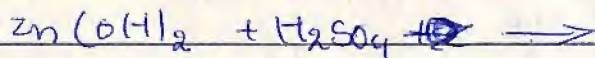
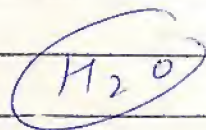
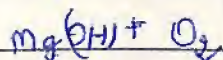
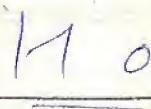
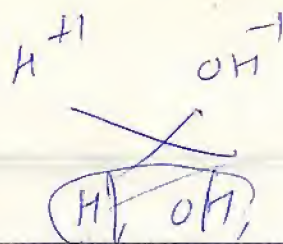
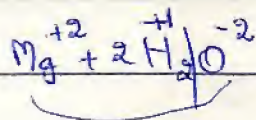
ਗਾਇਨ

ਸ਼ਬਦ

ਵੰਦ

ਸ਼ੁ





1 गज = लगभग 15.48 गज, 1 माथा

16 ओंस - 1 पौंड

14 पौंड - 1 स्टा

112 पौंड - 1 टन

2240 पौंड - 1 टन

1 गैलन = 4.5 लीटर

1 लीटर = 1.05 क्वि

8 स्टी - 1 माथा

12 माथा = 1 ताना

5 ताना = 1 छटाक

16 छटाक = 1 सें

40 सें = 1 मल

8 मल = 1 मी

12 इंच - 1 फुट

3 फुट - 1 गज

2240 गज = 1 माथा

8 माथा = 1 मल

4840 गज =

1 मल



3/6	- 3 मास	3.8 दिन
6/10	- 6 मास	
4/2	- 4 मास	6 दिन
10/8	10 मास	2.8 दिन
9/6	9 मास	1.8 दिन
11/4	11 मास	1.2
10/2	10	6
<del>6/8</del> 5/4	5 मास	6.8
1.2	12	

सकल 11 से कुल 5 - 21 न  
 कुल 6 से कुल 10 - मध्य

सकल 6 से कुल 6 - मध्य

6, 10, 7, 18, 16, 9,  
 17, 9, 20

$$4p + 2$$

$$4p + 50.2$$





P 26 Completely  
Stern

गणेशाय नमः । जगदीशाय

ॐ  
ॐ